ज्ञानामृत

जून, 1982
वर्ष 17 ❋ अंक 12
मूल्य 2.00

देहली-पाण्डव भवन की ओर से अजमलखां पार्क करौल बाग में आयोजित "शान्ति पथ प्रदर्शक" मेले का उद्घाटन आदरणीया ब्र० कु० दीदी मनमोहिनी जी सहप्रशासिका प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा किया गया

आबू पर्वत पर स्थित आध्यात्मिक संग्रहालय के वार्षिक उत्सव पर प्रवचन करते हुए भ्राता डी० वी० वाणवी, राज्य मन्त्री समाज कल्याण, गुजरात राज्य। मंच पर (दाएं से) ब्र० कु० चन्द्रिका, ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी, मुख्य सम्पादक ज्ञानामृत, वर्ल्ड रीन्युअल तथा प्युरीटी, ब्र० कु० रमेश जी, ब्र. कु. ममता ऊषा जी विराजमान हैं।

नई दिल्ली करोल बाग में अजमल खां पार्क में आयोजित शान्ति पथ प्रदर्शक मेले के उद्घाटन समारोह में मंच पर बैठे हैं ब्र० कु० प्रेम प्रकाश जी, भ्राता विनोद मिश्रा, हिन्दी हिन्दुस्तान पत्र के सम्पादक, गायत्री मोदी जी, ब्र० कु० दीदी मनमोहिनी जी, ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी, के० प्रसारन सालिस्टर जनरल तथा अन्य।

नवसारी मेले के उद्घाटन अवसर पर ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी को कुमारी कल्पना और लीना गुलदस्ता देते हुए स्वागत कर रही हैं

फ़ीरोज़पुर शहर में मानवकल्याण आध्यात्मिक सम्मेलन के अवसर पर मंच पर दाएं से ब्र० कु० तृप्ता अचल जी,ब्र० कु० दादी चन्द्रमणि जी, डिप्टी कमिशनर जी, ब्र० कु० बृजमोहन जी, डा० प्रताप जी तथा ब्र० कु० अमीर चन्द जी बैठे हैं

रायपुर सेवा केन्द्र द्वारा जगदलपुर में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन बस्तर संभाग के आयुक्त भ्राता आई० एस० एव ने किया । साथ में भ्राता विश्व कर्मा जी एवं ब्र० कु० आशा बहन तथा अन्य खड़े हैं

हुबली सेवा केन्द्र पर आध्यात्मिक संग्रहालय देखने के पश्चात् जगद्गुरु उनापटी महाराज जी ब्र० कु० बासवराज तथा शिवला जी तथा अन्य बहनों के साथ खड़े हैं

भिलाई इस्पात नगरी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भ्राता वी० जी० चौकसे जी, साथ में हैं ब्र० कु० कमला, विमला रेखा एवं अन्य भाई बहनें

लखनऊ आध्यात्मिक मेले के अवसर पर हुए शिक्षक सम्मेलन में भाषण करते हुए उपकुलपति जी ।

Regd. N.

D(E)-70

लखनऊ में आयोजित 'उद्योग में योग' प्रदर्शनी का अवलोकन करने के बाद यू० पी० राज्य के गृह मन्त्री, सिंचाई मन्त्री, उद्योग मन्त्री तथा भ्राता जे० डी० शुक्ला जी ब्र० कु० सती जी तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहनों के साथ दिखाई दे रहे हैं

नवसारी मेले के अवसर पर आयोजित महिला स्नेह मिलन में सम्बोधन करती हुई प्रेमिला बेन भट्ट । उनकी दायीं ओर ब्र० कु० लता, मेना बेन, ब्र० कु० कल्याण बेन तथा बाईं ओर ब्र० कु० नीता बेन, भारती बहन बैठी हैं

ब्यावर सेवा केन्द्र पर न्यायविद स्नेह मिलन रखा गया । चित्र में भ्राता पुरुषोत्तम दास कुदाल न्यायाधीश राजस्थान उच्च न्यायालय, सेशन जज भ्राता रणवीर सहाय जी, मुनसिफ मैजस्ट्रेट भ्राता चन्द्रकान्त गुप्ता जी, तथा ब्र० कु० गंगा जी, राधा जी, अनुराधा जी तथा अन्य कई वकील बैठे हैं

अमृत सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ	क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
१.	त्याग की परिभाषा	..... १	१२.	महात्यागी (कविता)	..... २०
२.	स्मृति, पुनःस्मृति और विस्मृति (सम्पादकीय)	..... २	१३.	सत्य की खोज (नाटक)	..... २१
३.	खुल गए सब राज़ (कविता)	..... ५	१४.	चलो वतन की सैर करें (कविता)	..... २७
४.	अविनाशी सुख का साधन	..... ६	१५.	आध्यात्मिक सेवा समाचार (चित्रों में)	..... २९
५.	नर्क और स्वर्ग	..... ८	१६.	अमूल्य हीरे जो कौड़ियों के भाव मिलते हैं	..... ३१
६.	आध्यात्मिक सेवा समाचार (सचित्र)	..... ९	१७.	ये लोग मेरी बात क्यों नहीं मानते	..... ३२
७.	ग्लानि के शूलों में मुस्कराता जीवन	..... १२	१८.	तीर्थराज 'आबू-पर्वत'	..... ३३
८.	भोलापन	..... १३	१९.	'आबू अब्बा' शब्द मात्र ही सुख शान्ति का सार है (कविता)	..... ३६
९.	योग : प्राचीन और नवीन	..... १४	२०.	संगत लातो है रंगत	..... ३७
१०.	सीट आरक्षण कर लो (कविता)	..... १५	२१.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	..... ३८
११.	समाचार विचार	..... १७			

त्याग की परिभाषा

अव्यक्त बाप-दादा

पहला है देह का त्याग अर्थात् देहभान का त्याग, देह की स्मृति का त्याग, देह रूपी घर का त्याग। जैसे हद के सन्यासी अपने घर का, सम्बन्ध का त्याग कर जाते, नियम प्रमाण वापिस नहीं आ सकते, वैसे आप ब्राह्मण बेहद के सन्यासी भी इस पुराने देह रूपी घर को त्याग करने का जब संकल्प किया, तो फिर इस पुराने देह रूपी घर में आकर्षण नहीं हो सकता। इसके लिए यह युक्ति कि हम मेहमान हैं, मेहमान को अपना असली घर याद रहता है, तो आपको भी अपना असली घर फरिश्ता सो देवता ही याद रहे।

जैसे बाप-दादा पुराने शरीर का आधार लेता है लेकिन फँस नहीं जाता, ऐसे कर्म करने के लिए आधार लिया और फिर अपने फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो जाओ। निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाओ।

त्याग मूर्त बनने का पहला कदम फ़ालो फ़ादर के समान किया है ? ब्रह्मा बाप के संकल्प में, मुख में सदा यही रहा कि यह बाप का रथ है, सिर्फ़ ब्रह्मा बाप ने रथ दिया या आप लोगों ने भी दिया ? आप सब का यह वायदा—जैसे बिठाओ, जहाँ बिठाओ—यह है त्याग की परिभाषा।

—:०:—

स्मृति, पुनः स्मृति और विस्मृति

ध्यान से देखा जाए तो यह संसार स्मृति और विस्मृति का एक अद्भुत खेल है। हरेक मनुष्यात्मा में ये दोनों प्रकार की योग्यताएं समाहित हैं। ये आत्मा से अभिन्न हैं। कोई भी क्रियाशील, कार्यरत अथवा चेतन प्राणी इस कर्म क्षेत्र पर किसी क्षण इनसे रहित नहीं होता बल्कि यदि यह कहा जाए कि मनुष्य के शिक्षण-प्रशिक्षण, उसकी धारणा-अवधारणा, उसके ज्ञान-विज्ञान और कर्म-विकर्म का ये मूल हैं तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्या कोई कर्म ऐसा है जिसे करते समय मनुष्य स्पष्ट अथवा अस्पष्ट रूप से या प्रगट व गुप्त रूप से किसी-न-किसी बात की, उद्देश्य की, घटना की अथवा व्यक्ति की स्मृति में न हो ? माँ एक बजे खाना बनाते समय इस स्मृति में होती है कि बच्चा स्कूल से लौटने वाला होगा। मुसाफिर १८ न० प्लेटफार्म पर अमुक समय पर इस स्मृति को लेकर ही तो पहुंचता है कि उस समय अहमदाबाद जो गाड़ी जाती है, उसमें उसे अमुक स्टेशन तक जाना है। ऐसे ही प्रातः उठने के समय से लेकर रात्रि के सोने के समय तक स्मृति की सुई एक ऑटोमेटिक घड़ी की तरह क्षण-क्षण चलती ही रहती है। यहाँ तक कि निद्रा रूपी विस्मृति की स्थिति में जाने की भी उसे स्मृति रहती है और निद्रा में भी अनेक बार स्वप्न रूप में उसके मन में कई प्रकार की स्मृतियाँ उभर आती हैं।

स्मृति के महत्व को समझते हुए कार्यान्विति

अतः जबकि स्मृति अटूट है, आत्मा से अभिन्न है और कर्म का मूल है और पाप-पुण्य, वर्तमान-भविष्य, विद्या-अविद्या सब इसी पर टिके हैं तो इस अद्भुत योग्यता, शक्ति अथवा गुण को समझना बहुत जरूरी है! आश्चर्य की बात है कि इस अनुपम योग्यता की ओर चिन्तकों का यथा-वान्छित ध्यान नहीं गया। शिव बाबा ने ही आकर ब्रह्मा बाबा के माध्यम से इस जादू-भरी शक्ति का सदुपयोग समझाया है और इसके गलत प्रयोग से होने वाले दुष्परिणामों से भी अवगत किया है।

शिव बाबा ने सतयुग के आदि से लेकर कलियुग के अन्त तक के समूचे इतिहास की व्याख्या इसी एक दार्शनिक तत्त्व को लेकर समझाई है। उन्होंने उदाहरणों से इस रहस्य का उद्घाटन किया है कि मनुष्य की दृष्टि, वृत्ति, स्थिति और कृति का संबन्ध उसकी स्मृति से कैसे है और किस प्रकार आत्मिक तथा ईश्वरीय स्मृति के द्वारा वह नर से नारायण बन जाता है और इसी बात की विस्मृति के फल-स्वरूप वह देव से मानव और मानव से दानव में बदल जाता है। उस सारे दर्शन को समझने से लगता है कि ये एक स्मृति अल्लाहदीन के चिराग या अली बाबा के 'खुल सिम सिम' से भी अधिक चमत्कारी और फलोत्पादक है।

वास्तव में देखा जाए तो विस्मृति का अपना कोई अलग अस्तित्व नहीं बल्कि आत्मा के इस स्वभाव के कारण कि वह एक समय में एक की स्मृति में रह सकती है, उसे दूसरी बातों की बिस्मृति स्वतः हो हो जाती है। जैसे एक व्यक्ति एक कमरे में उपस्थित होने से दूसरे कमरों से स्वतः और स्वभावतः अनुपस्थित होता है, ऐसी ही बात स्मृति और विस्मृति की भी है, जब हम आत्मा की स्मृति में स्थित होते हैं तब देह की विस्मृति स्वतः ही हो जाती है; उसके लिए हमें कोई अलग से पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता। इसी प्रकार, जब कोई मनुष्य देह और देह के सम्बन्धियों की स्मृति में होता है। तब वह आत्मिक विस्मृति में होता है।

ईश्वरीय ज्ञान हमें यही बताता है कि हम किस की स्मृति में स्थित हों

अतः जबकि किसी-न-किसी की स्मृति में हमें

स्वभावतः रहते ही हैं और स्मृति का ही हमारे हरेक कर्म से घनिष्ठ सम्बन्ध है तो बुरे कर्मों से बचने के लिए और श्रेष्ठ धारणा के लिए यह जानना आवश्यक है कि हम किस स्मृति में रहें ताकि उसकी विरोधी बातें स्वतः ही विस्मृत हो जायें। वास्तव में इस जानकारी को ही 'ईश्वरीय ज्ञान' कहते हैं। **ईश्वरीय ज्ञान हमें यह समझाता है कि किस प्रकार स्वयं को देह मानने से विकर्म तथा आत्मा की स्मृति में रहने से सत्कर्म होते हैं, किस प्रकार स्वयं को सतयुग अथवा आदि काल में देवता मानने की स्मृति में स्थित करने से हममें पुनः दैवी गुणों का संचार होता है, किस प्रकार वानरों अथवा असभ्य लोगों को अपना पूर्वज मानने से मनुष्य नैतिक उत्थान के पुरुषार्थ में हतोत्साहित होता है, किस प्रकार सभी जीव-प्राणियों को परमात्मा का रूप मानने से मनुष्य का मन चंचल होता है ओर उसका आत्म-नियन्त्रण टूट जाता है और इसके विपरीत किस प्रकार एक ज्योति-बिन्दु स्वरूप परमात्मा को परमधाम का वासी परमपिता बनाने से तथा उसकी स्मृति से मनुष्य में सद्गुणों का उत्कर्ष होता है।**

स्मृति और पुनःस्मृति से ही संस्कार

स्मृति का एक महत्त्व और भी है। स्मृति से संस्कार निर्मित होता है और पुनः पुनः स्मृति से संस्कार दृढ़ होता है। स्मृति न होते रहने से, अर्थात विस्मृति से, संस्कार का विलय होता है, आदत धीमी होती है और मन की दूषित वृत्तियाँ ढीली होती हैं। अतः यदि हम आत्मिक स्मृति में स्थित होने का अभ्यास करें तो दैहिक स्मृति का पुराना, पक्का संस्कार और उससे जुटे हुए संस्कार तथा मनोविकार ढीले होंगे। पहले दैहिक स्मृति और पुनः स्मृति से ही हमारे दूषित संस्कार पक्के हुए थे। अब उनके विरोधी तथा प्रतिरोधी, अर्थात आत्मिक तथा पारमात्मिक स्मृति से ही हमारे देह-भान का अन्त होता है। इसी प्रकार, शान्ति रूपी स्वधर्म की स्मृति से अशान्ति रूपी संस्कार का अन्त, आनन्द की स्मृति से खेद, चिन्ता अथवा वेदना का अन्त, प्रेम की स्मृति से घृणा का अन्त होता है। अतः परमपिता के इन गुणों की स्मृति से मनुष्यात्मा में इन सद्गुणों का विकास होता है और इनके विरोधी गुणों का अन्त होता है तथा, इस प्रकार, परिवर्तन होता है।

स्मृति और पुनः पुनः स्मृति कैसे हो ?

इस तरह जब हम परमपिता परमात्मा की स्मृति के महत्त्व को समझ लेते हैं तो प्रश्न उठता है कि हम इस स्मृति को ध्रुव कैसे बनायें ? क्या उपाय करें कि आत्मिक विस्मृति न हो और परमपिता परमात्मा की स्मृति से भी हमारी बुद्धि न चूके ?

इस विषय में हमें एक तो यह याद रखना चाहिए कि हमें तीव्रतम स्मृति उस ही की आती है जो हमारा प्रियतम हो। संसार में मनुष्य का सम्बन्ध तो कई व्यक्तियों से होता है और उनसे उसका स्नेह भी होता है परन्तु जिस से उसकी अधिक प्रीति हो तथा जिस से उसे अधिक प्राप्ति की आशा हो, उसकी स्मृति प्रयास किये बिना ही उसके मन को आकृष्ट करती रहती है। अतः यदि परमपिता परमात्मा से हमारी अनन्य एवं अटूट प्रीति होगी तो उसके प्रति हमारी स्मृति भी निरन्तर और सबल तथा सवेग होगी। अतः प्रश्न यहाँ आ खड़ा होता है कि परमात्मा के प्रति हमारी प्रीति अत्यन्त वेगपूर्ण कैसे हो ?

तुलनात्मक परिचय जरूरी

जीवन के अनुभव का विश्लेषण करने पर हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि प्रीति और प्राप्ति को बल देने के लिए हमें परमपिता परमात्मा के तुलनात्मक परिचय की आवश्यकता है। परमात्मा को केवल जान लेना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि अन्य आत्माओं—साधु-सन्तों, महात्माओं, गुरुओं, माता-पिता, शिक्षकों, दानियों, वैद्यों, आदि-आदि से तुलनात्मक रीति से कितना समुद्रतल और आकाश का भेद है—यह जानने की जरूरत है। यदि एक व्यक्ति हमें विष देता है और दूसरा उसकी तुलना में हमें अमृत पिलाता है, एक हमें डबोता है और दूसरा उसकी बजाय हम डुबते हुओं को निकालता है, एक हमें उलटा ज्ञान देकर नरक में धकेलता है और दूसरा

हमें नरक की अग्नि से निकाल कर स्वर्ग ले जाता है, एक के मत पर चलने से हमने जन्म-जन्म मृत्युलोक में यम की फाँसी, रोग, शोक, चिन्ता, दुःख, अशान्ति और झंझट तथा जंजाल ही पाया है और दूसरे ने उसकी तुलना में हमें स्थायी सुख, सदाकालीन शान्ति, विकारों से निवृत्ति, चिन्ताओं से मुक्ति, झंझटों से छुटकारा और शाश्वत आनन्द दिया है तो स्वाभाविक है कि उसकी ओर हमारा मन लपकेगा ही। मन हमें खींच कर उसकी ओर भागेगा, उसकी याद तो भुलाये नहीं भूलेगी। जिसने अपार सुख दिया और वह भी शाश्वत और वह भी मुफ्त, उसके लिये हमारा स्मृति सागर कैसे नहीं ज्वार भाटे की तरह उभरेगा—जैसे पूर्णमासी की चाँदनी में सागर की लहरें सवेग उठती हैं? जिस ने हमें प्रेम से सराबोर किया, उसके लिये क्या हमारे प्रेम का प्याला छलकेगा नहीं? जिस ने हमारे आड़े समय में हम से मित्रता की, क्या उसकी स्मृति, पुनः स्मृति और पुनः पुनः स्मृति से हम रह सकेंगे? नहीं-नहीं। उस प्रीतम की याद तो हमारे आत्मन का न्युक्लियस अथवा नाभिक (Neucleus) बन जायेगी। हमारा मन उसकी याद में तो दीवाना हो जायगा। उस पर तो हम सब-कुछ वारने और न्योछावर करने के लिये तैयार हो जायेंगे। उसके प्रति समर्पण होने में ही हम अपनी सफलता मानेंगे। परन्तु इस के लिये ऐसा तो तुलनात्मक परिचय चाहिए कि जो एक धुंधले फोटो की तरह न हो बल्कि अति स्पष्ट (vivid and distidct) हो—ऐसा कि मन पर छप जाये।

अतः न केवल तुलनात्मक परिचय की जरूरत है बल्कि स्पष्ट, उज्ज्वल, गहन परिचय की आवश्यकता है जिसमें कुछ असमंजस की, संदेह की या धुंधलेपन की रंच भी बात न हो।

प्रसंग और चिह्न सहायक

अन्यश्च, हमें यह याद रखना चाहिए कि जिसका प्रसंग छिड़ा हो, उसकी सूरत तो सामने आ ही जाती है। अतः चर्चा, प्रसंग, वर्णन और आलाप भी हमें याद दिलाते हैं। गीत का रिकार्ड सुनकर याद आता है कि यह किसका रिकार्ड है; किसी का प्रसंग-वश वर्णन होने पर उसकी स्मृति उभर आती है; किसी का यशोगान होने पर उस ओर मन जाता ही है। अतः यदि हम पररपिता परमात्मा के केन्द्र पर जाएं, उनकी कर्त्तव्य भूमि पर जाएं, उनके वचनामृत रूप उनकी मुरली सुनें, उनके चरित्रों का श्रवण करें, उनकी कृपा से जो अनुभव किसी को हुआ अथवा जो संस्कार परिवर्तन किसी के जीवन में हुआ, उसे सुनें तो भी उसकी पुनः पुनःस्मृति आयेगी और इस पुरानी दुनिया की बातें भूलेंगी। उनकी महिमा सुनते-सुनते मन उनकी यादों में ही लीन हो जायेगा, चित्त गद्‌गद हो उठेगा और स्मृति मधुर-मधुर एवं आनन्दप्रद हो जायेगी। उसकी स्मृति की चाश्नी चख कर मन तो वहां से हटना चाहेगा ही नहीं।

बाधाओं को हटाने की जरूरत

फिर स्मृति की उत्तरोत्तर वृद्धि में कोई बाधा न आये, उसका खयाल रखना जरूरी है। स्मृति को मिटाने, धुंधला करने, ओझल करने, तोड़ने आदि का कारण बनती हैं देहाभिमान की बातें, निन्दा-द्वेष भरी चर्चा, विषय-विकारों से भरी फिल्में या पुस्तकें, स्थूल अथवा व्यर्थ चर्चा में मन को जज़्ब करने वाले दोस्त, मन को स्मृति के प्रतिकूल बनाने वाले उकसाहटदायक भोजन आदि। इनसे यदि हम बच कर रहें तो गोया हम अपने ही मार्ग को साफ करते हैं और अपने लिए आनन्द के प्रवाह को निर्विघ्न बनाते हैं।

इस प्रकार इन बातों को समझते हुए यदि हम बार-बार ईश्वरीय स्मृति का अभ्यास करेंगे तो निस्संदेह हमारा संस्कार-परिवर्तन होगा, हमारे कर्म शुभ होंगे और हम नर से श्रीनारायण पद के अधिकारी बनेंगे।

—जगदीश

खुल गये सब राज़

ब्र० कु० रामऋषि शुक्ल, लखनऊ

सतयुगी सुख-सृष्टि के दिन आ गये फिर आज़।
खुल गये सब राज़।

शिव पिता में नव-सृजन के जगे शुभ संकल्प
अब पुराने विश्व के दिन शेष हैं अति अल्प।
नवल-नूतन विश्व के अब सज रहे हैं साज।
खुल गये सब राज़।

स्वयं अपना पूर्ण परिचय दे रहे भगवान
दे रहे हैं अटल सुख के, शांति के वरदान
रच रहे हैं देव-मानव और देव-समाज।
खुल गये सब राज़!

आज उद्घाटत पुनः हैं सकल सृष्टि-रहस्य
इस धरा पर देव-जीवन के प्रकट हैं लक्ष्य
लक्ष्य यह धारण करें हम, बनें बिगड़े काज।
खुल गये सब राज़।

शक्तियों का पुनः असुरों से छिड़ा संग्राम
हो रही है पुनः सम्पादित विजय अभिराम
गूंजती है सत्य की जय की पुनः आवाज।
खुल गये सब राज़।

पाण्डवों में आत्म-बल का फिर हुआ संचार
कौरवों की, यादवों की अब सुनिश्चित हार
स्वयं प्रभु ने फिर रखी है द्रौपदी की लाज।
खुल गये सब राज़।

आज लंका को मिटाने आ गये फिर राम
बन्धनों से मुक्त सीता को मिला विश्राम
अब मिटेगा विश्व से फिर शीघ्र 'रावणराज'।
खुल गये सब राज़।

नव-सृजन के हेतु पुनःविरचित यज्ञ-विधान
नव प्रजा के हेतु ब्रह्मा भी प्रकट मतिमान!
ज्ञान-वीणा-वादिनी के स्वर उठे फिर बाज।
वेद-शास्त्र-पुराण-गीता के खुले सब राज़।
खुल गये सब राज़।

अविनाशी सुख का साधन

ब्र० कु० चक्रधारी,
शक्तिनगर, देहली

प्यारे बच्चो, अब गर्मी की छुट्टियां आरम्भ हो गई हैं। आजकल आप सभी कभी शरबत, कभी ठण्डी-मीठी लस्सी, कभी आइसक्रीम और कभी मीठे-मीठे रसीले आमों तथा अन्य अनेक प्रकार के फलों का आनन्द ले रहे होंगे। सिर्फ इतना ही नहीं, खेलने-कूदने के साथ-साथ आप अपनी मनपसन्द मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद कहानियां सुनने और पढ़ने में भी व्यस्त होंगे। है न ऐसा ही? आप सोच रहे होंगे, अबकी बार दीदी हमें कौन-सी कहानी सुनायेंगी।

देखो, आपने यह तो सुना ही होगा कि यदि 'धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया और यदि चरित्र गया तो मानो सब-कुछ चला गया' अर्थात् जीवन में चरित्र का स्थान सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। चरित्रहीन व्यक्ति चाहे कितना भी धनवान हो, सुखी नहीं हो सकता और चरित्र की गिरावट के कारण एक दिन उसकी धन-सम्पत्ति भी खत्म हो जाती है। इसके विपरीत चरित्रवान प्राणी के जीवन में सुख, शान्ति, खुशी सदा कायम रहते हैं। यह सुख, जिसे 'आत्मिक सुख' अथवा 'अतिन्द्रिय सुख' कहा जाता है, भौतिक पदार्थों से मिलने वाले अल्पकालीन सुख से कई गुना अधिक होता है। इसके उदाहरण हमारे इतिहास में भी मिलते हैं कि राजाओं (जैसे राजा भृतरि हरि) ने उस सुख की खोज में अपना राज्य, धन, ऐश्वर्य सबका त्याग कर दिया। इसी ईश्वरीय सुख से सम्बन्धित हम तुम्हें एक कहानी सुनाते हैं।

किसी कस्बे में रामलाल नामक एक व्यक्ति रहता था। उसका जीवन बहुत साधारण था। उसके पास कोई ऐश्वर्य के साधन नहीं थे परन्तु फिर भी, उसका जीवन सुख-चैन से गुजर रहा था।

एक दिन की बात है कि जब वह रात को सोया हुआ था, उसने एक स्वप्न देखा। स्वप्न में उसने देखा कि उसके घर से कुछ दूरी पर बहुत बड़ा खजाना दबा हुआ है और उस खजाने को पाने के लिए वह अपने घर से बाहर निकला और दायीं ओर चलने लगा। थोड़ी दूर चलने पर वह एक बार फिर दायें हाथ की ओर मुड़ गया और फिर कुछ कदम चलने के बाद बायीं ओर मुड़ गया। थोड़ा ही आगे जाने पर उसने एक महात्मा को एक वृक्ष के नीचे बैठे हुए देखा। वह महात्मा जी के नजदीक जाकर बैठ गया। महात्मा जी नेत्र मूंदे तपस्या में मग्न थे। रामलाल चुपचाप इसी इन्तजार में बैठा रहा कि कब महात्मा जी अपने नेत्र खोलेंगे। नेत्र खोलने पर उसने महात्मा जी से पूछा—"महात्मन्, क्या आप मुझे बता सकते हैं कि खजाना कहां दबा हुआ है। आप तो पहुंचे हुए योगी मालूम होते हैं। मुझे विश्वास है, आप मुझे अवश्य ही उस छिपे हुए खजाने के बारे में बता सकेंगे।"

महात्मा जी ने 'हां' में सिर हिलाते हुए कहा—"यहां से लगभग १०० गज के फासले पर जाकर बरगद का एक विशाल वृक्ष है। उस वृक्ष के पास एक भारी-भरकम पत्थर पड़ा है। तुम उस पत्थर को उठाकर खोदना आरम्भ करोगे तो थोड़ी-सी मिट्टी निकालने के पश्चात तुम्हें वहां सोने की मोहरों

से भरा हुआ कलश मिल जाएगा ।" इतना कहकर वे फिर तपस्या में मग्न हो गये।

यह स्वप्न देखते ही रामलाल की नींद खुल गई। वह हड़बड़ा कर उठ गया। उसने आकाश की ओर देखा, अभी रात बहुत बाकी थी। आसमान में सितारे झिलमिला रहे थे। चन्द्रमा की बिखरी हुई शीतल चांदनी में सब-कुछ चांदी-सा चमकीला प्रतीत हो रहा था। वह स्वप्न के विषय में सोचने लगा। उसने सोचा कि यदि यह स्वप्न साकार हो जाए तो कितना अच्छा हो जाए। फिर वह कितनी जल्दी धनवान हो जाएगा और फिर ऐश्वर्य की जिन्दगी व्यतीत करेगा। यह सोचकर उसका मन खुशी में नाचने लगा, बांछें खिल गईं। परन्तु दूसरे ही क्षण उसे विचार आया—अरे, कहीं स्वप्न भी सच हुआ करते हैं। यूं ही ख्याली पुलाव मत बनाओ। जो-कुछ तुम्हारे पास है, उसी में ही सन्तुष्ट रहकर अपनी जिन्दगी व्यतीत करो। और, इस तरह अपने मन को समझा कर वह फिर सो गया।

आखिर सुबह हुई। घड़ी ने पांच बजाए और वह आंखें मसलता हुआ उठ बैठा। उसे रात का स्वप्न फिर याद हो आया। उसने सोचा—"क्यों न एक बार चलकर देख ही लिया जाए। हो सकता है मेरी तकदीर खुलने का दिन आ गया हो। कहते हैं न "भगवान जब देता है छप्पर फाड़ कर देता हैं।" यह सोचकर वह चारपाई से उठा, मुंह-हाथ धोया और घर से बाहर निकल आया। उसकी मानसिक स्थिति बहुत विचित्र-सी हो रही थी। अन्तर्द्वन्द्व चल रहा था, जाए या नहीं जाए। कहीं उसका जाना व्यर्थ तो नहीं हो जाएगा! आखिर यह सोचकर कि कोशिश करने में हर्जा ही क्या है, वह स्वप्न के अनुसार घर से दायीं ओर चल दिया। थोड़ी दूर तक चलने के पश्चात् वह फिर दायीं ओर मुड़ा और फिर कुछ चलने के पश्चात् बायीं ओर मुड़ गया। थोड़ा ही आगे जाने पर उसने सचमुच एक महात्मा को एक वृक्ष के नीचे तपस्या में मग्न बैठे हुए देखा। उसका मन-मयूर नाच उठा। उसे लगा कि उसका स्वप्न सच हो जाएगा क्योंकि जैसा उसने स्वप्न में देखा था, हूबहू उसने वैसा ही पाया। वह महात्मा जी के नज़दीक बैठ गया।

ज्यों ही महात्मा जी ने नेत्र खोले, उसने उनसे पूछा—"महात्मन्! मैं आपके पास एक प्रश्न लेकर आया हूं। आप एक श्रेष्ठ किस्म के योगी मालूम होते हैं। मुझे निश्चय है कि अपनी योग-शक्ति के बल पर आप मुझे अवश्य बता सकेंगे कि खज़ाना कहां दबा हुआ है। यह कह कर वह उनके उत्तर का इन्तज़ार करने लगा।

महात्मा जी ने 'हां' में सिर हिलाते हुए उसे बिल्कुल वैसे ही बताया जैसा कि उसने स्वप्न में देखा था। रामलाल ने महात्मा को प्रणाम किया और उस स्वर्ण मोहरों से भरे कलश को पाने के लिए चल पड़ा। वहां से १०० गज की दूरी पर जाकर उसे बरगद का विशाल वृक्ष दिखाई दिया जिसके नीचे एक भारी-भरकम पत्थर पड़ा हुआ था। रामलाल ने चारों ओर देखा। दूर-दूर तक कोई नहीं दिखाई देता था। उसने वह पत्थर उठाया और मिट्टी को खोदना शुरू किया। थोड़ा ही खोदने पर उसका हाथ किसी सख्त चीज से जा टकराया। उसने झांक कर देखा--ये लो, सोने की अशर्फियों से भरा हुआ चमचम चमकता कलश उसे दिखाई दिया! उसने कलश को निकालने के लिए दोनों हाथ ज्यों ही आगे बढ़ाये त्यों ही उसके मन में एक विचार कौंधा। उसने सोचा कि जबकि महात्मा जी को यह मालूम था कि इतनी धन-राशि यहां छिपी पड़ी है, फिर भी उन्होंने इसे नहीं निकाला और अपनी योग-साधना में मग्न हैं। अवश्य ही उन्हें इससे उत्तम प्राप्ति हो रही है जिसकी वजह से उन्हें इसकी परवाह नहीं है।

वह कलश को वहीं छोड़ कर उठ खड़ा हुआ और यह सोचता हुआ कि महात्मा को ऐसी कौनसी श्रेष्ठ प्राप्ति हो रही है, वह उनसे अवश्य पूछ कर ही रहेगा, वापस चल दिया। कुछ ही मिनटों में वह वहां पहुंच गया। महात्मा जी अभी भी तपस्या में मग्न थे। उनके चेहरे पर तेज था और आनन्द की रेखाएं

झलक रही थीं। वह शान्त होकर बैठ गया।

महात्मा जी ने पुनः नेत्र खोले। रामलाल ने उनके सामने अपना प्रश्न रख दिया। तब महात्मन् ने उसे समझाया—"ये भौतिक पदार्थ तो सब नश्वर हैं, जब तक ये हमारे पास होते हैं, तब तक हम खुश रहते हैं। नाशवान होने के कारण ये एक दिन हमसे छिन जाते हैं और हम फिर दुःखी हो जाते हैं। परमपिता परमात्मा जो अविनाशी है, सत चित आनन्द स्वरूप है, सदा शिव है, उसकी अविनाशी याद उस परम आनन्द की प्राप्ति कराती है, उस अतीन्द्रिय सुख, आत्मिक सुख की प्राप्ति कराती है कि जिसका कोई शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। उस प्राप्ति के आगे ये भौतिक पदार्थ सब तुच्छ हैं। जब मनुष्य भौतिकता में लीन हो जाता है तो वह इस अधिभौतिक प्राप्ति से वंचित रह जाता है।" ये शब्द सुनकर रामलाल ने निश्चय किया कि आज से ही वह योग-अभ्यास आरम्भ करेगा और उस अविनाशी सुख की प्राप्ति में अपना जीवन लगाएगा।

प्यारे बच्चो, बाबा भी हमें यही समझाते हैं कि कर्म और धर्म अलग हो जाने के कारण ही पापकर्म विकर्म होते हैं। जब कर्म और धर्म का समन्वय हो जाएगा तो हमारा हर कर्म श्रेष्ठ होगा, सुखदायी कर्म होगा। इसलिए हमें कर्मयोगी बनना है। और प्रतिदिन कुछ समय योगाभ्यास के लिए अवश्य निकालना है। अच्छा, ओम शान्ति।

□

स्वर्ग और नर्क

ले० मुरारी लाल लोधा, शक्तिनगर, दिल्ली

एक दिन मेरे मित्र मनचन्दा जी का फोन आया। उन्होंने कहा कि आपके पड़ोस में परमपिता आये हुए हैं, क्या मिलना नहीं है। उनकी प्रबल प्रेरणा तथा बाबा (परमात्मा) की मदद से हमें अपने असली घर की राह मिली। यहां आकर हमने राजयोग की शिक्षा ली। बचपन से हम तो यही समझते आ रहे थे कि आत्मा का निवास स्थान हृदय में है परन्तु यहां आकर हमें पता चला कि हमारे शरीर में जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शक्ति (आत्मा) है, वह भृकुटी के मध्य रहती है तथा इसका अनादि निवास स्थान परमधाम है जहां परमपिता परमात्मा भी रहते हैं। हमें यहां आकर यह ज्ञान मिला कि हम आत्मा हैं और आत्मा शान्त स्वरूप, शुद्ध स्वरूप है। परन्तु नासमझी के कारण हम शरीर को ही सब-कुछ समझ सारा दिन चिन्तित हुए कर्म करते और दुःखी होते रहते हैं।

यदि हम आंखों के ऊपर के भाग, आत्मा के निवास-स्थान को देखें तो यह स्वर्ग की सीढ़ी है और यदि नीचे के भाग की ओर देखें तो यह नरक का द्वार है क्योंकि देह-दृष्टि रखने से विकार उत्पन्न होते हैं और विकार हमें नर्क की ओर धकेलते हैं। आत्मिक दृष्टि होने से विकारों का बोझा उतर जाता है और आत्मा स्वर्ग की ओर अग्रसर होने लगती है। हम जीते जी स्वर्ग और नर्क का अनुभव कर सकते हैं, केवल देखना यह है कि हमारी मानसिक स्थिति क्या है।

इस ईश्वरीय विद्यालय में आने पर लगता है कि हम सही स्थान पर आ गये हैं। चन्द दिनों में ही ऐसा लगता है कि इससे मेरा जन्म-जन्मान्तर का नाता है। यह मेरा अहो भाग्य है कि मैंने शक्तिनगर मेले में अपना बिछुड़ा परिवार पाया। यहां आकर मैंने सीखा कि "अपने-आप को निरहंकारी तथा निर्विकारी बनाकर निराकार बाबा के लव (स्नेह) में लीन हो निराकार स्वरूप बन जाओ।" यही सब बातों का सार है जिसमें ही हमें स्वर्गिक सुख का अनुभव होता है। □

बलसार सेवा केन्द्र को ओर से गायकवाड़ में 'उद्योग में योग' प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन मैनेजर सेठ बसन्तशाह ने किया। साथ में ब्र० कु० रोहित भाई, ब्र० कु० लता बहन व रक्षा बहन ← खड़ी हैं

पंढ़रपुर तीर्थ स्थान में एक विशेष सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया, चित्र में हरिभक्त पंथ के सुप्रसिद्ध दादा महाराज मनमाडकर अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं। मंच पर ब्र० कु० रमेश जी, ब्र० कु० ऊषा जी, ब्र० कु० सोमप्रभा व ब्र० कु० प्रमिला दिखाई दे रही हैं

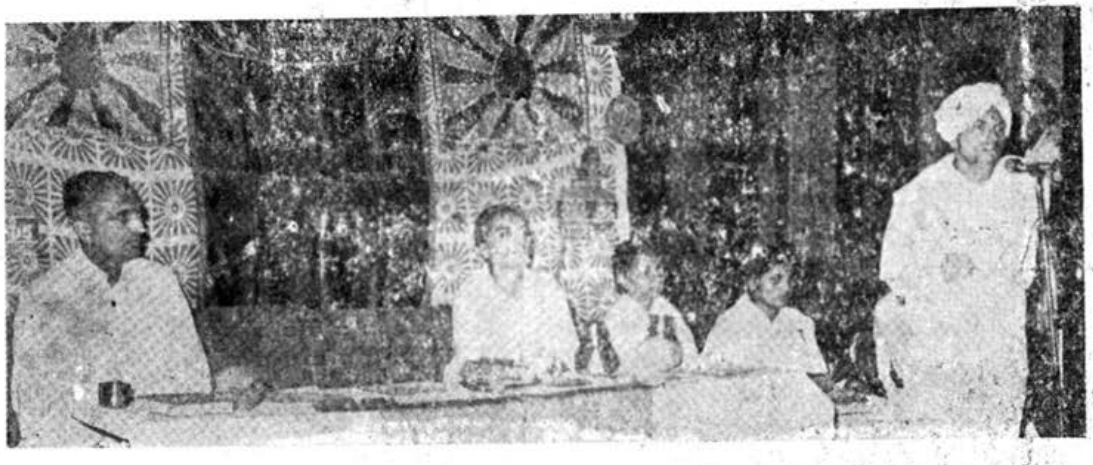

सिद्धपुर सेवा केन्द्र की ओर से कपड़े के एक मिल में 'उद्योग में योग प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन नगर पालिका के प्रमुख रसिक भाई कर रहे हैं। पास में मोहन भाई, विजय बहन खड़ी हैं

लखनऊ में भगवती बहन जी स्टेट मिनिस्टर भ्राता रणजीत सिंह जूदेव को आत्म स्मृति का टीका लगा रही हैं। साथ में मधुबाला बहन खड़ी हैं

दीदी मनमोहिनी जी पटेल नगर में योग कक्ष का उद्घाटन कर रही हैं। साथ में शुक्ला बहन जी, गायत्री मोदी जी ← व अन्य बहन-भाई खड़े दिखाई दे रहे हैं

सेवा समाचार चित्रों में

सिद्धपुर सेवा केन्द्र की ओर से कपड़े के एक मिल में प्रदर्शनी लगाई गयी, उद्घाटक भ्राता रसिक भाई को विजय बहन जी समझा रही हैं

भंडारा में प्रा० सांदूवेकर जी आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं, साथ में ब्र० कु० शोभा व ब्र० कु० प्रभा बहन खड़ी हैं

अम्बाला शहर में आध्यात्मिक कार्यक्रम में डिप्टी डी० ओ० उमा चोपड़ा अपने विचार सुना रही हैं, पास में ब्र०कु० सरोज, उमा बैठी हैं →

हैदराबाद सेवा केन्द्र की ओर से सिधीपेट ग्राम में आयोजित कार्यक्रम के अवसर पर मंच पर ब्र० कु० पुष्पा, भाषण करते हुए, ब्र० कु० प्रीतम ब्र० कु० कुलदीप, ब्र० कु० राधेश्याम दिखाई दे रहे हैं

मुलताई राममन्दिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन न्यायाधीश भ्राता जी० एस मीना जी ने अपनी पत्नी सहित किया। ब्र० कु० रुकमणी बहन चित्रों की व्याख्या दे रही हैं

असम के कांग्रेस आई के तरुण नेता भ्राता शम्भू प्रसाद शर्मा 'पत्रकार' को प्र० पि० ब्र० कु० ई० वि० वि० की सहप्रशासिका 'दीदी जी' सौगात दे रही हैं साथ में कलकत्ता की बिन्दु बहन दिखाई दे रही हैं

मेवाड़ टेक्सटाइल मिल के मालिक सम्पतमल लोढ़ा को प्रदर्शनी के उद्घाटन के पश्चात् प्यूरिटी पेपर एवं ज्ञानामृत ब्र० कु० आशा सौगात दे रही हैं। साथ में सभी अधिकारीगण खड़े हैं

ग्लानि के शूलों में मुस्कुराता जीवन

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, मधुबन, आबू

ग्लानी के बोल भी उतना ही सुख दें जितना महिमा के बोल देते हैं—ऐसा सामंजस्य जिस महान प्राणी के जीवन में आ जाता है, दूसरों के कटु वचन रूपी बाण जिस सज्जन के हृदय को नहीं बेध पाते, दूसरों के द्वारा किये गये नीचे गिराने के प्रयत्न जिन्हें आगे बढ़ाते हैं, दूसरों के जहरीले कांटे जिसके मन की शान्ति को अग्नि में नहीं बदलते ''ऐसे शक्तिशाली मन वाले महारथी सचमुच ही संसार में रावण राज्य को समाप्त करने में सबल होते हैं।

मनुष्य दूसरों की ग्लानि करके क्षणिक सुख व बड़प्पन का अनुभव करता है। संसार में ऐसे बहुत ही थोड़े मनुष्य होंगे जो दूसरों की ग्लानि कर आत्म ग्लानि अनुभव करते हों। ग्लानि करना मनुष्य का स्वभाव बन जाता है। वह इसे नीच कर्म नहीं समझता। परन्तु ऐसे मनुष्यों की संसार में कमी ही होती है जो ग्लानि रूपी जहर को हँसते-हँसते पीकर अमर हो जाते हैं। ग्लानि से प्रभावित न होना वास्तव में ही महात्माओं का मुख्य लक्षण है।

तो राजयोग-पथ के यात्री को ग्लानि के बोल को गले की माला का फूल समझना चाहिए। दूसरा अगर ग्लानी के बोल बोलता ही रहे तो हमें समझना चाहिए कि हमारी माला लम्बी हो रही है। कभी भी ग्लानि रूपी पत्थर फेंकने वाले का प्रत्युत्तर पत्थर फेंक कर नहीं देना चाहिए, परन्तु इन पत्थरों को जीवन में हीरे का स्थान दे देने के लिए इन ग्लानि के पुष्पों को सरल चित्त से सहन कर लेना चाहिए तब मनुष्य का जीवन उतना ही सुदृढ़ बन जाएगा जितना सुदृढ़ एक वीर का शरीर बार बार-वार सह कर बन जाता है।

अतः ग्लानि सुन कर चुप रह जाना—इसे कायरता नहीं बल्कि महानता महसूस करना चाहिए। आप देखेंगे कि ग्लानी सह लेने से कितने आन्तरिक सुख की अनुभूति होतो है। और ग्लानि करने वाला अपने आन्तरिक जहर को बार-बार उगल कर, स्वयं ही उसके प्रभाव से भस्मीभूत हो जाता है।

वास्तव में महानता की ओर कदम बढ़ाने वालों को संसार को अपने महान कर्म से प्रेरित करने वालों को ग्लानि सुनने के लिए भी उतनी ही तत्परता से तैयार रहना चाहिए। जो महान आत्मा ग्लानि के शब्दों को पुष्प रूप में स्वीकार करती है, तो वे पुष्प सचसुच ही उसके जीवन को सुगन्धित कर देते हैं और तब ही उसकी महानता की खुशबू दूर-दूर तक फैल जाती है। जैसा कि इतिहास कहता है दूसरों की ग्लानि करने वालों का नाम सदा के लिए घृणित रह गया और ग्लानि सहकर आगे आने वाले सूर्य की तरह विश्व में चमकते रहे हैं।

इसलिए अगर आपके गले की माला बढ़ रही है तो उसे बढ़ने दो। ये कमजोर विचार मन को न छूने दो कि लोग मेरी ग्लानी कर रहे हैं इससे मेरी गरिमा को धक्का लगेगा। नहीं ग्लानि के तूफान आपकी गरिमा को समस्त विश्व में प्रख्यात करने वाले सिद्ध होंगे। इसलिए वीर प्रकृति के पुरुषों को ग्लानि सुन कर निराशा की चादर ओढ़कर नहीं सो जाना होगा बल्कि ग्लानि करने वालों को अपने परम मित्र जान कर मन से उनके प्रति होने वाली ग्लानि को भी समाप्त करना होगा।

ब्रह्मा बाबा कहा करते थे—"ग्लानि हमारी जो करे, मित्र हमारा सोइ" कितने प्रेरणा दायक हैं ये

शब्द। जो दुश्मन के दिल को भी जीत लेने वाले हैं। ऐसा ही बाबा ने जीवन में करके दिखाया। उनकी सन्तान होकर उनका अनुसरण करना हमारे लिए शोभनीय है। ग्लानी करने वाले के लिए घृणा भाव त्याज्य है। घृणा भाव महानता का प्रतीक नहीं, तुच्छता है। महान पुरुषों के बोल महान, दूसरों के उन्नति के साधन होते हैं।

जिस प्रकार गुलाब का फूल काँटों के मध्य रहकर भी अपनी चमक और खुशबू से दूसरों के मन को लुभा देता है, उसी प्रकार एक योगी का जीवन ग्लानि रूपी काँटों के बीच सदा ही मुस्कुराता रहता है। उसकी अलौकिक मुस्कान भी अनेक वियोगी आत्माओं के मन को परमपिता की ओर खींच ले जाती है। □□

भोलापन

ब्र० कु० चिम्मन भाई, मधुबन आबू

बच्चों का भोलापन हरेक के मन को बरबस खींच लेता है। किसी अत्याचारी दानव का मानव भी बच्चों के भोलेपन को देखकर पिघल जाता है। भोलेपन में क्या आकर्षण है? घृणा, ईर्ष्या, द्वेष; तेरे मेरे के अभाव का। न उन्हें किसी से घृणा होती है और न ही लगाव। इसीलिए भगवान को भोला या भोलानाथ भी कहा जाता है और इसीलिए वह सर्व के प्रिय भी हैं। क्योंकि वे सम्पूर्णतया स्वच्छ व निर्विकारी हैं।

भोलापन एक बड़ा गुण है। भोले मनुष्य का मन चिकने घड़े की तरह होता है, जिस पर कुछ भी ठहरता नहीं। उसके हृदय को कोई अपने कटु वचन रूपी वाणों से बेधना चाहे तो सफ़ल नहीं होता। इसीलिए उसके मन में कभी चिन्ता व तनाव का वास नहीं होता। व्यर्थ की चतुराई, व्यर्थ की बुद्धिमानी, व्यर्थ की चालाकी—इन व्यवहारिक कही जाने वाली बुराइयों से वह दूर होता है। इसलिए उसका चेहरा सदा कमल सा खिला रहता है जिसे देखकर दूसरों के दुखी व चिन्तित मन की सलवटें भी खुल जाती हैं।

उनका भोलापन सभी को प्रिय लगता है। इसलिए उनका जीवन प्रेम स्वरूप हो जाता है। उसकी बुद्धि भोले भाव के कारण जल्दी ही शान्त हो जाती है, जिसकी उसे योग-अभ्यास में मदद मिलती है। उसके मन की शक्तियाँ व्यर्थ संकल्प, व व्यर्थ शब्द जाल में खर्च नहीं होतीं।

परन्तु साथ ही साथ भोलापन कहीं-कहीं एक अवगुण भी बनता देखा जाता है। उनकी बुद्धि तीव्र न होने के कारण वे किधर भी बह सकते हैं अर्थात संग दोष में जल्दी आ सकते हैं। कोई भी ज़िम्मेदारी सम्भालने में इन्हें समय लग जाता है। उन पर दूसरे लोग जल्दी ही विश्वास नहीं करते, इस डर से कि वह सारा भेद कहीं उलट न दे। क्योंकि उसमें हजम करने की शक्ति पूर्ण नहीं होती। इसलिए वह स्नेह पात्र तो बन जाता है, परन्तु कहीं-कहीं विश्वास पात्र नहीं बन पाता।

परन्तु फिर भी भोलापन आध्यात्मिक जीवन में महत्वशाली है। अगर तीव्र बुद्धि के साथ-साथ भोलेपन का समन्वय हो जाए तो सोने पर सुहागा। और यह भोलापन आत्मा को अनेक बुराइयों से बचाकर योगी जीवन बनाने में बहुत सहयोगी होता है। □

योग : प्राचीन और नवीन

ब्र० कु०रामऋषि शुक्ल, लखनऊ

योग के संबंध में अथर्ववेद में इस प्रकार के वचन हैं : "अष्ट चक्रा नव द्वारा देवानां पूरयोध्या ।" अर्थात्, आठ चक्रों और नव द्वारों वाला हमारा यह शरीर अयोध्या पुरी है जिसमें आत्मा रूपी देव का निवास है।

नव द्वार तो सर्वविदित हैं। वे हैं—दो नेत्र, दो कान, दो नासिका, एक मुख, एक गुदा (मल द्वार), एक उपस्थ (मूत्र द्वार)। आठ चक्रों के नाम इस प्रकार हैं—(१) मूलाधार—(४) दल (२) स्वाधिष्ठान—६ दल, (३) मणिपूरक—१० दल, (४) अनाहत—१२ दल, (५) विशुद्धि—१६ दल, (६) आज्ञा—२ दल, (७) ललाट-एकात्मक, (८) सहस्तार-शिरोभाग का सहस्र दल। ऐसी परिकल्पना है कि ये चक्र कमल पुष्पवत् हैं और इनके साथ सम्बद्ध संख्याएँ कमल-पत्र किंवा कमल-दल के समान हैं।

आठ चक्रों की प्राचीन और परम्परागत मान्यताएं योग ग्रंथों में नानाविधि निरुपित और वर्णित हैं। यहां हम उनके ही सन्दर्भ में कुछ तुलनात्मक विवेचना के साथ, परमात्मा शिव द्वारा उद्घाटित सत्य गीता-ज्ञान के आधार पर, आठ चक्रों के नये योगमूलक अर्थ-बोध प्रस्तुत कर रहे हैं।

१. मूलाधार के चार पत्र या दल जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधि के प्रतीक हैं। जीवन की ये चारों अवस्थाएं देहमूलक हैं और देह-भाव से संबन्ध रखती हैं। स्पष्टतः ये कष्टकारी अवस्थाएं हैं। इनके कष्टों का निराकरण या इनसे निवृत्ति ही योगी जीवन का लक्ष्य है। कहा गया है कि, 'न तस्य रोगों न जरा न मृत्यु : प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्। इस लक्ष्य के अनुरूप ही नवीन सहजयोग किंवा राजयोग कहता है कि मनुष्य देह-अभिमान का क्रमशः परित्याग करते हुए आत्मा-अभिमानी किंवा आत्मनिष्ठ बन जाय तो जीवन में अमरत्व का आनन्द सचमुच चरितार्थ हो जाय।

२. स्वाधिष्ठान के छः पत्र या दल छः महाविकारों को जीतने का निर्देश करते हैं। इनका तात्पर्य यह है कि पवित्र बन कर किंवा पवित्रता से काम को जीता जाय, सुख को धारणा में लाकर क्रोध को जीता जाय, शांति से मद को जीता जाय, प्रेम से मोह को जीता जाय, आत्मिक प्रकाश से लोभ को (लोभगत अन्धकार को) जीता जाय और आत्मिक आनन्द से अहंकार को जीता जाय। प्राचीन और नवीन दोनों ही योगी यह मानते हैं कि किसी भी उपलब्धि के लिए यह विजय पूर्वापेक्षित है, किन्तु नवीन योगी या राजयोगी का कथन है कि आत्म-बुद्धि बनकर इस अत्यन्त दुष्कर तथा असम्भवप्राय कार्य को काफी कुछ सहज-सरल बनाया जा सकता है।

३. मणिपूरक के दस पत्र या दल शरीर के ९ प्रकट द्वारों तथा एक शिरोभाग-स्थिति अप्रकट द्वार के प्रतीक हैं। ये दस द्वार तब सहज ही प्रकाशित हो उठते हैं, जबकि व्यक्ति-विशेष के जीवन में काम विजय और अन्य सम्बन्धित रिपुओं पर विजय सम्पन्न हो जाती है। ऐसा होने पर व्यक्ति विशेष का जीवन विभूतिमय हो उठता है।

४. अनाहत के बारह पत्र या दल १२ ज्योतिर्लिङ्गों के प्रतीक हैं। इनमें एक परमात्मा प्रमुख हैं, दो मानवता के आदिपिता और आदिमाता हैं, आठ उनके अनन्य अनुयायी हैं और एक अन्य विशिष्ट आत्मा है। ११ आत्माएं तब तक एकादश रुद्र हैं, तब तक रोती-भटकती आत्माएं हैं जब तक कि ज्योति-

(शेष पृष्ठ १६ पर)

सीट आरक्षण कर लो

ब्र० कु० राजकुमारी, शालीमार बाग, देहली

न बजी अभी सीटी, शीघ्र सम्पन्न बन लो।
हो जाओ सैट, अपनी सीट आरक्षण कर लो॥

बाबा का मुख हो तुम,
तेरे बोल हरे सबके गम;
दिव्यता की मूरत हो जा।
सूरत में रुहानी सीरत ले आ।

प्वाइन्ट सुनते सुनाते, स्वयं अब प्वाइन्ट बन लो।
न बजी अभी सीटी, शीघ्र सम्पन्न बन लो।

आ रहा सतयुग, सुख युग!
सीट अपनी आरक्षण कर लो।

तुम श्रेष्ठ! तुम महारथी! तुम सच्चे ब्राह्मण,
भरे अलौकिकता से तेरे मन का आँगण,

परे करो, पर-स्थिति को,
डटे रहो, अचल मनस्थिति हो,

नयनों से बाप को प्रत्यक्ष कर दो,
शीघ्र स्वयं को सम्पन्न कर लो,

आगामी सुख युग में.....
सीट अपनी आरक्षण कर लो।

रहो दुनिया में, पर दुनिया तुझ में न रहे,
हँसो, बोलो, पर मर्यादा याद रहे;

खुशी औ ज्ञान मन में आबाद रहे,
फिर भले विघ्न तेरे साथ रहें,

एक बाप दूसरा न कोई ऐसा तेरा मन हो।
न बजी अभी सीटी, शीघ्र सम्पन्न बन लो

आगामी सतयुग में.....
सीट अपनी आरक्षण कर लो।

तूने की उपेक्षा कई बार श्रीमत की,
न माना कहना, चलाई मनमत ही,

हुए कभी नाराज भगवान फिर भी?
फिर तुझे क्यों ग़म जब न चली तेरी,

अरे छोड़! न पहन रेगड़ी अब तो स्वरूप बन लो
न बजी अभी सीटी, शीघ्र सम्पन्न बन लो।

आगामी सुख युग में.....
सीट अपनी आरक्षण कर लो।
ले-ले कल्प-कल्प की बाज़ी,
न कर पिछली बातें ताज़ी,
छोटी-छोटी धारणा में ही।
है सफलता तेरी साधना की,
भले हो जाए विमुख जग सारा
रहे सम्मुख तुझ अर्जुन के आगे
सदा मछली की आंख का तारा
होंगे सिद्ध संकल्प, जब स्वयं को निसंकल्प कर लो
न बजी अभी सीटी, शीघ्र सम्पन्न बन लो।
आगामी सुख युग में.....
सीट अपनी आरक्षण कर लो।

□□

पृष्ठ १४ का शेष (योग : प्राचीन और नवीन)
बिन्दु परमात्मा स्वयं अवतरित होकर इनको भी अपने समान ज्योतिर्बिन्दु नहीं बना देते हैं।

५. विशुद्धि के सोलह पत्र या दल जीवन में १६ कलाओं के सम्पूर्ण उदय के प्रतीक हैं। इस सोलह कला सम्पूर्णता में ही मानव-जीवन में विष्णु के चरम ऐश्वर्य और चरम वैभव का आदर्श अपनी पूर्ण परिणति प्राप्त करता है।

६. आज्ञा के दो पत्र या दल मानव जीवन में द्वैत भाव की समाप्ति के प्रतीक हैं। अर्थात् इस केन्द्र का अधिपति मन 'मैं और मेरा' से ऊपर उठकर एकत्र रूप में परमात्मा की याद में स्थित हो जाय—वस्तुतः 'मन्मना भव' बन जाय।

७. ललाट केन्द्र की अधिष्ठात्री बुद्धि है और बुद्धि से ही हम 'मामेकम्' के गीता के उच्चतम आदर्श को जीवन में प्रत्यक्षतः परिणति दे सकते हैं। ऐसा होने पर बुद्धि में परमात्मा, आत्मा और सृष्टि जगत का सम्पूर्ण यथार्थ ज्ञान न केवल उद्घाटित होकर रह जाता है, वरन् धारण भी हो जाता है।

८. सहस्रार में ही आत्मा का अधिवास है। जैसा कि आदि शंकराचार्य ने कहा है : "सहस्रारे त्रिकोण मध्ये बिन्दू रूपेण संस्थिता।" कौन? ज्योति बिन्दु स्वरूप आत्मा। वही वस्तुतः हम हैं, न कि हम मात्र शरीर हैं। अस्तु।

प्राचीन और परम्परागत योग नीचे से ऊपर की ओर चलता है, और यह आरोहण अत्यन्त कठिन तथा दुस्साध्य है। इसके विपरीत, स्वयं परमात्मा शिव द्वारा शालिग्राम स्वरूप आत्माओं से प्रति प्रत्यक्ष रूप में निर्देशित नवीन सहजयोग किवां राजयोग अवतरण की प्रक्रिया में पर्याप्त सरल तथा सुसाध्य है। नयी योग-विधा में आत्मनिष्ठता के द्वारा बुद्धि, मन, संस्कार, स्वभाव, प्रवृत्ति, विचार और कर्म की शेष सात कक्षाओं या चक्रों किंवा केन्द्रों को सहज ही परिष्कृत किया जा सकता है। जीवन में शिव-सिद्धांतों की अनुकृति और सच्चे वैष्णव धर्म की परिणति इस प्रकार अधिक सरल, सहज और सुसाध्य है।

समाचार-विचार

समाचार—११ मई को धार्मिक कार्यकर्त्ताओं के विश्व सम्मेलन में अपने संदेश में सोवियत रूस के प्रधानमंत्री ने कहा—"आज के समय की सबसे बड़ी समस्या है—आणविक युद्ध को रोकना। उन्होंने कहा कि आस्तिक और नास्तिक—हर व्यक्ति के लिए आज यह अभूतपूर्व उत्तरदायित्व निभाना ज़रूरी है। पृथ्वी पर रहने वाले हरेक व्यक्ति को शान्ति की सुरक्षा के लिए अपनी ज़िम्मेवारी महसूस करनी चाहिए। क्योंकि यह समस्या सबकी सांझी समस्या है। इसके प्रति कोई भी व्यक्ति निष्चेष्ट या तटस्थ नहीं रह सकता।"

विचार—निस्संदेह एटम और हाइड्रोजन बमों के संग्रह से विश्व में एक अभूतपूर्व परिस्थिति बन गई है। इस द्वारा जो विनाश ज्वाला प्रगट हो सकती है उसका परोक्ष अथवा अपरोक्ष रीति से हर जीव प्राणी पर प्रभाव पड़ेगा। हर व्यक्ति की हत्या के लिए कई टन बारूद तैयार हो चुका है। आणविक अस्त्रों से होने वाली लड़ाई से जो विनाश होता है, उसका कुप्रभाव केवल उन्हीं दो देशों तक सीमित नहीं रहता बल्कि वह विश्व-व्यापी होता है। अतः हरेक व्यक्ति का यह उत्तरदायित्व है कि इस विषय में कुछ सोचे। परन्तु प्रश्न यह है कि एक सामान्य व्यक्ति इस आणविक युद्ध को रोकने में भला क्या कर सकता है। युद्ध शुरू करने का बटन इन दो देशों के दो व्यक्तियों ही के हाथ में है और उस बटन तक साधारण व्यक्ति का न तो हाथ ही पहुँच सकता है और न उसकी आवाज़ ही वहाँ तक पहुँचती है। दूसरे शब्दों में, विश्व के करोड़ों नर-नारियों का जीवन इन दो व्यक्तियों की मुट्ठी में है मानो ये दोनों महाकाल के माध्यम हैं। ये स्वयं युद्ध न चाहने पर भी युद्ध की तैयारी में लगे रहने पर मजबूर हैं। आप देखेंगे कि जिस दिन रूस के प्रधानमन्त्री ने उपरोक्त संदेश दिया उसी दिन रूस के प्रधान ने यह घोषणा की—"हमारे साम्यवादी दल का और देश की सरकार का मुख्य कर्त्तव्य हर प्रकार से अपने देश की रक्षा को मजबूत करना है। साम्राज्यवादी और उग्रवादी राष्ट्रों के कारण से हमें अपनी सतर्कता को बढ़ाना होगा।" एक देश के दो नेताओं के ये परस्पर विरोधी वक्तव्य और उनमें से भी प्रधान का युद्ध-परक वक्तव्य क्या इस बात का द्योतक नहीं है कि दोनों देशों के प्रधानों के सिरों पर काल की छाया है।

परन्तु प्रश्न यह है कि सामान्य व्यक्ति क्या करे? वह भावी को अटल मानकर हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाये? क्या वह आँखें मूँदकर काल-विकराल के विष का घूँट पी ले? नहीं, नहीं। यदि ये नेता काल और महाकाल का वरण करते हैं, और विध्वंसक शक्ति को प्राप्त करने में तल्लीन हैं तो सामान्य व्यक्ति को चाहिए कि वह कालों के भी काल परमात्मा का वरण करे और उससे रचनात्मक शक्ति प्राप्त करके नये विश्व की रचना के कार्य में प्रयत्नशील हो ताकि ध्वस्त आसुरी सभ्यता के खंडरात पर वह एक नई दैवी सभ्यता का निर्माण कर सके।

समाचार—धर्मप्रिय मुसलमानों की यह प्रथा है कि वे दिन में ५ बार घुटने टेककर नमाज़ पढ़ते हैं। नमाज़ के समय वे अपना मुख मक्का की ओर करते हैं क्योंकि अपने धर्म-स्थापक हजरत मोहम्मद की जन्मभूमि होने से वे उसे पवित्रतम नगर मानते हैं। इस बात को सामने रखकर स्वीडन देश के एक उद्योगपति ने यात्री मुसलमानों की सुविधा के लिए कम्पास (दिशा निर्देश देने वाला मिक्नातीसी यन्त्र) बनाया है ताकि यात्री लोग जब एक देश से दूसरे देश में जायें तो उन्हें मक्का की दिशा मालूम करने में

कठिनाई न हो। इस यन्त्र में ५ महाद्वीपों के ११८ देशों के नाम हैं। इनमें से किसी भी देश में जाने वाला व्यक्ति सहज रूप से मक्का की दिशा मालूम करके प्रार्थना कर सकता है।

विचार—हरेक व्यक्ति को धार्मिक स्वतन्त्रता है। उसकी जैसी निष्ठा हो, वह वैसा ही कर सकता है। अत: किसी अन्य धर्म के बारे में कुछ न कहकर हम तो इतना ही कहेंगे कि योगी को देह और दैहिक जन्म के स्थान आदि को ध्यान में न रखकर विदेह बनना होता है और आत्म-स्थित होना होता है। वह इस बात का चिन्तन नहीं करता कि देह का मुख किधर हो ? वह इस बात का ख्याल रखता है कि उसका मन किधर की ओर हो। जबकि उसे उपासना परमात्मा ही की करनी है, तब उसका विचार-प्रवाह परमात्मा ही की दिशा में होता है चाहे उसका शरीर कहीं भी हो। उसके लिए पवित्रतम नगर रूहों की दुनिया है। अत: वह अपने मानस चक्षु को उस ओर फेरकर देह-रहित परमात्मा ही की स्मृति में एकाग्र करता है।

समाचार—अभी ७ मई को अनेक देशों में बसे बौद्ध लोगों ने मैत्रेय बुद्ध की जयन्ती मनाई। बौद्धों का यह मन्तव्य है कि जब संसार में ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है और दु:ख की अति वृद्धि होती है तो बुद्ध अपने परमधाम से बौद्धीसत्व अथवा मैत्रेय बुद्ध के रूप में अवतरित होते हैं। बौद्ध लोग बुद्ध के परमधाम को "तुशित" कहते हैं और उनकी यह मान्यता है कि स्वयं बुद्ध ने भी कहा था कि बोधीसत्व मैत्रेय के रूप में कुछ हजार वर्ष के बाद अवतरण होगा। क्योंकि तब संसार में ज्ञान प्राय: लोप हो चुका होगा और लोग दु:ख से कराह रहे होंगे। कुछ बौद्ध लोग जो मैत्रेय बुद्ध की प्रतिमा बनाते हैं उसमें वो मैत्रेय को तीन नेत्रों तथा तीन मुखों वाला प्रदर्शित करते हैं। वे उसे आध्यात्मिक ज्ञान के कारण ही मैत्रेय कहते हैं तथा शुद्ध बुद्धि अथवा पवित्रता ही के कारण "बोधीसत्व" नाम देते हैं।

विचार—स्पष्ट है कि आदि सनातन धर्म के धर्म-शास्त्र गीता के वचनों का ही समरूप बौद्धों का भी यह मन्तव्य है। उन्हीं की तरह ही वे ज्ञान प्राय: लोप होने के समय और धर्म-विमुखता के कारण दु:ख वृद्धि के समय कल्याणकारी (मैत्रेय) एवं ज्ञान स्वरूप (बोधी+सत्व) "परमात्मा" का परमधाम से अवतरण मानते हैं। परमधाम जिसे गीता में शान्तिधाम भी कहा गया है और निर्वाणधाम भी, उसी का नामान्तर रूप "तुषित" है जिसका अर्थ, शान्ति एवं सन्तुष्टता की प्राप्ति है। पुनश्च, आदि सनातन धर्म के मूर्ति-विज्ञान के अनुसार ही वे उस अवतार को त्रिनेत्री भी प्रदर्शित करते हैं और कल्याणकारी परमात्मा (शिव) को आदि सनातन धर्म में त्रिनेत्री तो माना ही गया है परन्तु आदि सनातन धर्म वालों तथा बौद्ध धर्म वालों को यह सोचना चाहिए कि जब ज्ञान के प्राय: लोप के समय परमात्मा का अवतरण होगा, तब ज्ञान न होने के कारण लोग परमात्मा को पहचान तो पायेंगे नहीं। पहचान तो ज्ञान ही से होती है। इसलिए ही तो मुहावरे में लोग कहते हैं कि हमें अमुक व्यक्ति की "जान-पहचान" नहीं है। गोया पहले जान (ज्ञान) हो, तभी पहचान होती है। परन्तु आश्चर्य की बात है कि आज एक ओर तो लोग यह कहते हैं कि अब धर्म तथा ज्ञान का प्राय: लोप है परन्तु दूसरी ओर उन्हें इस बात का गर्व है कि उन्हें ज्ञान है !

समाचार—राज्य सभा में इस बार भ्रष्टाचार के विषय को लेकर एक अच्छे स्तर पर चर्चा-परिचर्चा हुई। विरोधी दल का कथन यह था कि भ्रष्टाचार ने बहुत व्यापक और उग्र रूप ले लिया है। किन्तु केन्द्रीय वित्त मन्त्री, प्रणब मुखर्जी ने यह सिद्ध करने की कोशिश की कि भ्रष्टाचार है तो परन्तु वह थोड़ा-बहुत यहाँ-वहाँ, कुछ राजनीतिज्ञों, प्रशासन अधिकारियों, व्यापारियों आदि में है अर्थात् अधिकतर लोगों में नहीं बल्कि कुछ ही लोगों में है।

विचार—यह तो एक रिवाज-सा ही हो गया है कि सरकार विरोधी दल द्वारा लगाए गए किसी आरोप अथवा शासनिक त्रुटि या अवहेलना को

स्वीकार नहीं करती परन्तु फिर भी यदि यह मान लिया जाए कि भ्रष्टाचार का रोग अल्प-संख्या ही को लगा है तो उसके प्रति गम्भीरता की कमी ऐसे ही है जैसे कि कैंसर नामक घातक रोग के जीवाणुओं अथवा जीव-कोषों का शरीर में थोड़ी संख्या में होने पर उनके प्रति अलबेलापन।

पुनश्च, भ्रष्टाचार केवल आर्थिक व्यवहार में ही अनैतिकता का नाम नहीं है बल्कि राजनीतिक, सामाजिक, पारिवारिक, यहाँ तक कि आज विदेशों में वासनात्मक स्वच्छन्दता (Permissiveness) को भ्रष्टाचार नहीं मानते तथा सभी देशों में अस्त्रों-शस्त्रों द्वारा हिंसा भावना की क्रियान्विती को भी भ्रष्टाचार के अन्तर्गत परिगणित नहीं करते। गोया जन-सूची जितनी बड़ी होती जाती है, भ्रष्टाचार की सूची उतनी ही छोटी होती जाती है।

समाचार—राजस्थान में सीकर के समीप जीन-माता नामक गाँव में चैत्र और अश्विनी महीनों में हजारों की संख्या में लोग दुर्गा पूजा के लिए एक मन्दिर में जाते हैं। उस मन्दिर में दुर्गा की मूर्ति एक चट्टान काटकर बनी हुई है। भक्त लोग दुर्गा, जिसे वे देवी मानते ही हैं, के मुख में नौ दिन तक हजारों लीटर शराब उंडेलते हैं। वहाँ के पुजारी लोग इसे देवी के मुख द्वारा भोग लगाया मानकर इसे प्रसाद की तरह समादरित करते हैं और बहुत ऊंचे दामों पर इस "प्रसाद" को बेचते हैं।

विचार—देख लीजिए कैसी धर्म ग्लानि है! भक्त और पुजारी—दोनों का क्या हाल है! क्या ऐसा भक्ति मार्ग सद्गति का मार्ग है या दुर्गति का? शराब को प्रसाद मानना, यह कैसी बुद्धि-भ्रष्टता है! शराब वाले स्थान को मन्दिर कहना, यह दिवालिया-पन ही तो है। जिस स्थान से लोगों को चरित्र की प्रेरणा मिलनी चाहिए, वहां पर ही माया बस रही है। देवी के नाम पर दैत्य वृत्ति से शराब लूटना, यह कैसा घोर पाप है और इस पर भी तुर्रा यह कि पुजारी लोग धर्म और प्रसाद का नाम लेकर शराब का व्यापार करते हैं। तोबा! तोबा!!

समाचार—भारत में जो यात्री विभिन्न प्रदेशों अथवा विदेशों से आकर यहां के ऐतिहासिक महत्त्व के स्थलों को देखने जाते हैं तो वे उनके बारे में कुछ स्पष्ट नहीं समझ पाते। उदाहरण के तौर पर जब वे लाल किला देखते हैं तो वे यह देखकर दंग रह जाते हैं कि लाल किला के दो द्वार दिल्ली गेट और लाहौरी गेट नाम से हैं परन्तु उसमें जो महल है, उसके कोई दरवाजे ही नहीं हैं। अतः लोग पूछते रह जाते हैं कि शहंशाह अपने महल में आते-जाते, घूमते-फिरते कैसे थे! फिर, दूसरा प्रश्न यह उठता है कि दीवान-ए-आम के पीछे की ओर जनता के लिए जो दरबार लगता था, वहां जब शहंशाह अपने तख्त पर बैठकर बोलते थे तो उन दिनों जबकि लाउडस्पीकर नहीं थे तब लोग उनकी बात सुन कैसे पाते थे?

विशेष प्रश्न तो यह है कि उन शहंशाहों का जो रानी निवास था, उसमें रानियों के योग्य कोई शौचालय, स्नान गृह, शृंगार कक्ष इत्यादि जैसी सहुलियतें तो हैं ही नहीं तब भला वे वहां अपना जीवन किस विधि राजकुलोचित रीति से गुज़ारती थीं?

विचार—हम कहते न थे कि इतिहास बहुत-सी गुत्थियों से भरा पड़ा है क्योंकि इसमें बहुत-सी बातें ऐसी हैं जिनकी व्याख्या नहीं और बहुत-से प्रश्न ऐसे हैं जिनके उत्तर नहीं। इतिहास विकृतियों से भरा पड़ा है। कितने ही राजाओं ने मन-माने इतिहास लिखवाये हैं। फिरदोसी द्वारा लिखी गई महमूद गजनवी की महिमा और फिर निन्दा का तो लोगों को पता चल गया वरना तो राजाओं ने पैसा दे-देकर "ऑर्डर" पर जो इतिहास लिखवाये, उसकी क्या कहें? कहावत प्रसिद्ध ही है कि जो पैसा देता है, बाजे वाले ट्यून उसी की मर्जी की बजाते हैं। कितनी हेरा-फेरी हुई है, इसका तो कोई हिसाब-किताब (Audit) हो ही नहीं सकता। मुगल बादशाहों का इतिहास तो कोई बहुत अधिक पुराना नहीं है। उससे अधिक पुराने इतिहास के पन्नों को कहीं समय रूपी दीमक ने तो, कहीं विरोधी धर्म वालों की दुर्भावना

रूपी सीलन ने तो, कहीं प्राकृतिक प्रकोपों के हिलोरों ने कितना जर्जरा कर दिया होगा, यह भगवान के सिवाय कौन जानता है ? एक १० वर्ष की कन्या ही जब ८० वर्ष की दादी अम्मा बनती है तो उसके चेहरे पर कितनी सलवटें, कितने शिकन और समय तथा धक्का-मुक्की के कितने निशान, परेशानियों के कितने चिह्न अंकित हो जाते हैं कि भूगोल के विद्यार्थी ने भी नक्शे में इतनी रेखाएं नहीं देखी होंगी। तब क्या कोई चित्रकार उसका चित्र देखकर उसके १० वर्ष की आयु का चित्र बना सकता है ? ऐसे ही सतयुग और त्रेतायुग के इतिहास और श्रीकृष्ण तथा परमात्मा शिव के अवतरण के इतिहास का हाल भी ऐसा ही है कि उसके बारे में भी यथा सत्य बोध आज नहीं है।

□□

महात्यागी

ब्र० कु० रछपाल, मोहाली, चन्डीगढ़

त्याग की महिमा अपरम्पार,
गायन करे सारा संसार।
हम भी सुनें, यह हुई अभिलाषा,
महात्यागी की क्या परिभाषा!
बच्चों के संकल्प को जानें,
बाप-दादा लगे राज़ सुनाने :—
"महात्यागी को नहीं कोई आकर्षण,
महात्यागी है सदा समर्पण।
महात्यागी को नहीं देह का भान,
महात्यागी देह में मेहमान।
महात्यागी को सदा घर की याद,
महात्यागी नहीं करता फरियाद।
महात्यागी सदा रहे निर्माण,
महात्यागी सदा करे निर्माण।
महात्यागी सदा सहनशील,
महात्यागी न बने वकील।
महात्यागी सदा व्यर्थ से परे,
महात्यागी सदा समर्थ में रहे।
महात्यागी में नहीं लगाव,
महात्यागी को नहीं झुकाव।
महात्यागी न होवे विचलित,
महात्यागी सदा शुभचिंतक।
लौकिक, अलौकिक बंधन से न्यारा,
महात्यागी का बापदादा ही सहारा।
महात्यागी रहे सदा न्यासी,
महात्यागी सदा विकर्म-संन्यासी।
महात्यागी नहीं कभी भी साधारण,
उसका हर कर्म बने उदाहरण।
अलौकिकता उसके जीवन में समाई,
महात्यागी करे डबल कमाई।
महात्यागी संगमयुगी वपारी,
ज्ञान-रत्नों का वह जवाहरी।
महात्यागी नहीं कभी अलबेला,
महात्यागी नहीं कभी अकेला।
महात्यागी सदा शक्ति - स्वरूप,
सहयोगी और सनेही - रूप।
महात्यागी ही महाज्ञानी, महायोगी,
महात्यागी-आत्मा सदा नीरोगी।
महात्यागी को अभी है आगे बढ़ना,
सर्वस्व-त्याग की सीढ़ी चढ़ना।"

—०—

सत्य की खोज

ब्र० कु० अजय, ग्वालियर

पात्र

१. ब्रह्माकुमारी
२. गृहस्थी मार्ग—पिता, माँ, पुत्र
३. जिज्ञासु
४. सन्यास मार्ग—सन्यासी, पादरी, मौलवी
५. भक्ति मार्ग—भगत जी, चार अन्य भक्त।

चौराहे का दृश्य—

बीच चौराहे में एक स्तम्भ खड़ा है, जिसमें तीन नाम पट्ट लगे हैं—गृहस्थी मार्ग, भक्ति मार्ग और सन्यास मार्ग। ये तीनों, तीन दिशाओं की तरफ़ ईशारा करते हैं। इसके ठीक नीचे एक श्वेत वस्त्रों, घुटनों में सिर दिये, युवक बैठा है। ये जिज्ञासु है। धीमे-धीमे, धीरे-धीरे स्पाट लाइट का प्रकाश इस युवक पर पड़ना शुरू होता है, जो तेज होता जाता है। साथ ही बैक ग्राउन्ड में इसकी आवाज भी प्रकाश के साथ-साथ तीव्र होती जाती है, तीव्रतम होकर रुक जाती है। युवक धीमे-धीमे खड़ा होता है। तीनों मार्गों की तरफ़ देखता है, और स्वतः बोलता है :

जिज्ञासु—ओह, कुछ पता नहीं। कुछ भी पता नहीं। कितना विचार किया, लेकिन कुछ समझ में नहीं आता। ओह, मैं क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ, किधर जाऊँ, मैं कौन हूँ ? कहाँ से आया ? मुझे जाना कहाँ है ! ···इस जीवन का सच्चा मार्ग क्या है ? मेरा लक्ष्य क्या है ? क्या है ? क्या है ?

(तभी गृहस्थी मार्ग की तरफ़ स्पाट लाइट का प्रकाश फैलता जाता है, और एक व्यक्ति, उसकी पत्नी तथा पुत्र का प्रकाश होता है। व्यक्ति के कंधे पर पुत्र का हाथ रखा है। ये तीनों अंधों के समान टटोल-टटोल कर चल रहे हैं।)

पिता—आजा, आजा बेटा, हाँ-हाँ, बस ऐसे ही, शाबास। अरे तू ही तो अपने खानदान का नाम रोशन करेगा। बस यों ही चलता जा, देख संभल के, बिल्कुल पीछे-पीछे ज़रा भी इधर उधर मत होना, अरे तू ही तो मेरा राजा-बेटा है, सपूत बेटा है। शाबास, आजा-आजा हाँ-आँ बहुत अच्छे।

पुत्र—बिल्कुल फ़िक्र मत करो पिता जी, मैं तो बस आपके पीछे-पीछे ही चल रहा हूँ। मेरा क्या दिमाग खराब हुआ है जो मैं इधर-उधर जाने की सोचूं। मैं क्यों बेकार में नया रास्ता खोजने की तकलीफ़ उठाऊँ। मैं तो बस आपके ही पद-चिन्हों पर चल रहा हूँ।

माँ—हाँ, बेटा, अरे, तू ही तो हमारा सपूत श्रवणकुमार है। जुग-जुग जियो मेरे लाल। बस यों ही चलता चल। एक दिन ठिकाने लग ही जायेगा। (तीनों चलते-चलते जिज्ञासु के नज़दीक पहुँच जाते हैं)

जिज्ञासु—नमस्कार, क्षमा करियेगा, कौन हैं आप लोग, कहाँ जा रहे हैं ?

पिता—(झुंझलाकर) कौन हैं ? कहाँ जा रहे है? अरे भई दिखता नहीं है, अन्धे हो क्या ? अरे अपनी मंज़िल की तरफ जा रहे है, बढ़े जा रहे हैं, तुम से मतलब ?

जिज्ञासु—जी मतलब तो कुछ नहीं। बस यूँ ही जानना चाहता था, आपकी मंज़िल कौन सी है ?

पिता—अजी आपने हमें कोई लुच्चा-लफंगा समझ लिया है क्या ? अरे हम तो खानदानी लोग

हैं। हमारे बाप-दादे जो करते आये वही तो करेंगे हमें नाक थोड़े ही कटानी है अपने खानदान की। हाँ, नहीं तो क्या। जो हमारे बाप-दादों ने अपने जीवन में किया वही तो हमारी भी मंज़िल होगी।

जिज्ञासु—अच्छा तो क्या-क्या किया आपके बाप-दादों ने अपने जीवन में ?

पिता—अरे, अजीब घन चक्कर हो तुम भी। अरे किया क्या, शादी की, बच्चे पैदा किये, मकान बनाया, धन कमाया, यश कमाया। निठल्ले थोड़े ही थे तुम्हारी तरह।

जिज्ञासु—फिर तो आपने भी शादी को होगी ? बच्चे पैदा किये होंगे, धन कमाया होगा, यश कमाया होगा। ज़रा बताने का कष्ट करेंगे क्या ?

पिता—अरे तुम, कहीं पागल तो नहीं हो? अरे हमारे बाप-दादों ने यही किया उनके बाप-दादों ने यही किया, उनके भी पुरखों ने यही किया। है··· है···और अब तो हमारे इस लल्लू की भो सगाई हो गई है। और ये भी हमारे खानदान में चार चाँद लगायेगा। अरे इसमें इतना विचार को क्या बात है? सारी दुनिया यही करती आई है, और कर रही है। हमने भी यही किया, हमारा लल्लू भी यही करेगा। इसका लल्लू भी यही करेगा। क्यों लल्लू ठीक है न ?

पुत्र—हाँ पिता जी, बिल्कुल ठीक है। अरे मैं कोई नालायक थोड़े ही हूँ, जो आपकी आज्ञा नहीं मानूँगा। (कुछ रुक कर) है···है···पिता जी अगर इन महाशय को कोई आपत्ति न हो तो मैं जरा सिगरेट पी लूँ।

जिज्ञासु···हाँ···हाँ···ज़रूर, मुझे क्यूँ आपत्ति होने लगी। जितना निकोटिन और कार्बन डाई आक्साइड जायेगा, आपके फेफड़ों में जायेगा। टी० बी० होगी आपको होगी, कैन्सर होगा आपको होगा। यहाँ तो वैसे ही सभी का धूम्रपान आप ही निकल रहा है। इतने कारखाने हैं, इतना ट्रैफिक है। वैज्ञानिक तो पहले ही कह रहे हैं कि हवाओं में कार्बन डाई-आक्साइड फेफड़ों की सहन शक्ति से तीन गुणा अधिक हो गया है। और फिर मजे की बात ये है कि जो डाक्टर बीमारियाँ बताते है, वो खुद धूम्रपान किये जा रहे हैं। फिर आप ना करे—ऐसा कैसे ? मरना ही है तो शौक से मरिये।

पुत्र—अजी आप तो बुरा मान गये। अब क्या बताऊँ। वैसे तो में दिन भर में सिर्फ तीन ही पैकेट सिगरेट पीता हूँ, लेकिन आज ज़रा शराब की और गोश्त की दुकानें बंद थी, इसलिये ज़रा कुछ ज्यादा ही तलब लगी है।

जिज्ञासु—धन्य हो-धन्य हो। अच्छा तो आप धूम्रपान के साथ-साथ माँसाहार और मद्यपान भी करते हैं। जैसे दुनिया में और कुछ खाने व पीने के लिये बचा ही नहीं है। बड़ी खुशी की बात है, लेकिन जरा बतायेंगे कि क्यों करते हैं इन चीजों का सेवन ?

पुत्र—क्यों करते हैं ? अजी हमारी फिल्मों का हीरो खटराग-खूटन भी तो करता है, हमारे बड़े-बड़े नेता भी तो करते हैं, हमने किया तो क्या हो गया। अरे यहाँ तो बड़े-बड़े महारथी पड़े हैं, हम तो बहुत छोटे हैं।

जिज्ञासु—लेकिन बंधु, तुम तो युवक हो। इस दल-दल में धँसने से पहले जरा सोचो तो कि क्या यही जीवन का लक्ष्य है कि, खाओ, पीओ और मर जाओ। तुम्हारे बाप-दादे उनके भी बाप-दादे सभी तो मौत के मुसाफ़िर निकले। क्या तुम्हारे जीवन का उद्देश्य भी सिर्फ मौत का इन्तज़ार है ? इससे अधिक कुछ नहीं ?

पुत्र—अरे दुनियाँ मरती आई है। हम भी मर जायेंगे, कौन सी बड़ी बात होगी। अभी तो जी लें।

जिज्ञासु—तुम इसे जीना कहते हो ? हर क्षण बाद तुम मौत के नज़दीक होते जा रहे हो। और तू इसे जीना कहते हो ? अरे जीना तो वो होता है जब कुछ ऐसा पा लिया जाये, जो मौत के बाद भी हमारे साथ जा सके। जिसे मौत भी न मार सके।

पुत्र—ऐसा तो युगों बाद ही कोई होता है, जो मौलिक चिंतन कर सके। हर कोई के बस की बात थोड़े ही है।

जिज्ञासु—क्या तुमने कभी कोशिश की ? क्या

तुम्हारे अन्दर आकुलता जागी, कि इस मौत के कारवां का साथ छोड़ दो। क्या पल भर भी तुम ने विचार किया कि कभी इन मृग तृष्णाओं के पीछे-पीछे भागते रहने का क्या परिणाम होगा ? क्षण भर को आँखें खोलकर ठहर कर तो देखो। शायद कोई नई रोशनी, नया मार्ग पा सको। छोड़ दो मित्र, इन मौत के मुसाफ़िरों का साथ और विवेक का सहारा लो। तुम कहाँ जा रहे हो ? क्यूँ जा रहे हो ? तुम क्या कर रहे हो ? क्यूँ कर रहे हो ? आओ, मेरे साथ आओ, हम खोज करें।

मां—(क्रोध से मारने दौड़ती है) अरे, नाश मिटे, तू मेरे ही लाल के पीछे क्यों पड़ा है। चल भाग यहाँ से। जाने कहाँ-कहाँ से चले आते हैं। मेरे श्रवण-कुमार को भड़काने के लिये। चलो जी, चल बेटा। मुड़के भी नहीं देखना, ऐसे गंदे लोगों को। जाने कौन पागल है।

पिता—आजा-आजा बेटा, शाबास। तू ही तो मेरा सपूत बेटा है, तू ही तो अपने खानदान का नाम रोशन करेगा। आजा-आजा हाँ—हाँ—बहुत अच्छे (वापस जिधर से आये थे उधर ही चले जाते हैं। प्रकाश धीमा होने लगता है।)

जिज्ञासु—हे भगवान, तेरा लाख-लाख शुक्रिया, जो मैं इधर नहीं गया। ये तो मेरे जीवन का मार्ग नहीं है। इन्हें तो खुद ही नहीं पता—ये कहाँ जा रहे हैं ? क्यूँ जा रहे हैं ? लेकिन अब, अब मैं किधर जाऊँ ?

(भक्ति मार्ग के रास्ते पर प्रकाश तीव्र होने लगता है। साथ ही बड़े जोर-शोर से भजन-कीर्तन करते हुये भक्त मण्डली का स्टेज पर प्रवेश होता है। भक्तगण बड़े ही भाव विभोर होकर हरे रामा-हरे कृष्णा की धुन गा रहे है। खूब ढोलक, झाँझ, मंजीरे, घंटे आदि बजाये जा रहे है। सभी भक्त बड़े-बड़े तिलक लगाये, ज़नेऊ बाँधे, केवल धोती पहने हैं। दो भक्तों के कंधों पर डोली है, जिसमें किन्हीं भगवान की पत्थर की मूर्ति रखी है। कुछ समय बाद उनका कीर्तन समाप्त होता है, और वे जिज्ञासु के नजदीक पहुँचते हैं)

जिज्ञासु—नमस्कार भगत जी। अहो भाग्य! जो आप मिल गये। मैं तो बड़ी परेशानी में था कि मैं किधर जाऊँ क्या करूँ ?

भगत जी—भक्ति करो बेटा। भक्ति करने से भगवान बड़े प्रसन्न होते हैं। भजन करो, मन्दिर जाओ, कुछ धार्मिक बनो।

जिज्ञासु—लेकिन भक्त जी, भगवान है कहाँ ? भक्ति किसकी करें ?

भगत जी—अरे तुम्हें दिखाता नहीं है क्या ? डोली में भगवान की ही सवारी तो निकाल रहे हैं हम। जाओ-जाओ दर्शन कर लो।

जिज्ञासु—(जाकर गौर से डोली का निरीक्षण करता है) अरे भगत जी इसमें तो लड्डू, अगरबत्ती, फूल और एक पत्थर की मूर्ति के अलावा कुछ भी नहीं है। भगवान कहाँ है ? आप तो कह रहे थे डोली में भगवान् है।

भगत जी—अरे, क्या बकता है ? वो मूर्ति ही तो भगवान् है।

जिज्ञासु—क्षमा करिये भगत जी—लेकिन इस मूर्ति को तो शिल्पी ने पत्थर तराश करके ही बनाया है, तो आखिर ये पत्थर ही है ना। भगवान कहाँ है ?

भगत जी—अरे बे समझ, जब पत्थर था तब था अब तो ये भगवान ही हैं। देखते नहीं हो इनका रूप कितना सुन्दर है। कैसी मनोहर मुस्कान खेल रही है इनके सुन्दर सलौने मुखड़े पर। कैसा मधुर आकर्षण है इनके चेहरे पर। आहा···आ···हा···(भाव विभोर हो जाता है।)

जिज्ञासु—लेकिन भक्त जी, मुझे तो इस मूर्ति की शक्ल बिल्कुल हमारे जैसी दिखाई दे रही है क्या आपको पक्का भरोसा है कि भगवान की शक्ल ऐसी है ? आपको कहाँ मिले थे भगवान? मुझे भी बता दो ना, मैं भी मिल लूँगा।

भगत जी—(कानों पर हाथ रखकर राम-राम-राम) कैसा ज़माना आ गया है ? भगवान पर सन्देह। घोर कलियुग है जी, राम राम राम (अन्य भगत गुस्से से देखते हैं)।

जिज्ञासु—क्षमा करिये भगत जी। आज्ञा हो तो एक बात पूछूं?

भगत जी—पूछो। लेकिन खबरदार कोई उल्टी सीधी बात की तो हड्डी पसली तोड़ देंगे।

जिज्ञासु—अरे नहीं महाराज आप तो बड़े ही दयालू हैं। हाँ, तो अभी आप कहे थे कि धार्मिक बनो। तो धार्मिक कैसे बना जाये, महाराज? (सभी भक्त हँसते हैं।)

भगत जी—अरे तुम तो बिल्कुल ही बुद्धू हो। तुम्हें इतना भी नहीं पता? अरे रोज गंगा-स्नान करो, मन्दिर जाओ, पूजा करो, दान-दक्षिणा दो, मन्दिर बनवाओ, धर्मशाला बनवाओं। जो ये सब करता है वही तो धार्मिक व्यक्ति होता है।

जिज्ञासु—अच्छा भगत जी, अगर कोई इन सब बातों के साथ-साथ खूब चोरी करता है रिश्वत लेता हो, विषय-वासनाओं में पड़ा हो, एक दम भ्रष्टाचारी हो तो उसे कोई पाप नहीं लगेगा?

भगत जी—बिल्कुल नहीं, धार्मिक पुस्तकों में ऐसा कहा गया है कि दान धर्म करने से मनुष्य सर्व पापों से मुक्त हो जाता है।

जिज्ञासु—इसका मतलब तो ये हुआ कि जो जितना ज्यादा भ्रष्ट होगा वो उतना ही ज्यादा धन दान कर सकेगा और उतना ही बड़ा धार्मिक व्यक्ति कहलायेगा। इस प्रकार धर्म का आदमी के चरित्र से तो कोई सम्बन्ध ही नहीं हुआ। और फिर इसका अर्थ तो ये हुआ कि आपका भगवान कलियुगी लोगों से भी ज्यादा रिश्वत खोर है।

भगत जी—खबरदार जो···(मारने दौड़ता है)

जिज्ञासु—अरे गलती हो गई महाराज। क्षमा करिये। मिलावटी चीजें खा-खाकर जुबान जरा फिसलने लगी है। (कुछ रुककर) अच्छा भगत जी एक बात बताइये।

भगत जी—पूछो।

जिज्ञासु—ये आप सब लोगों ने तिलक क्यों लगा रखा है?

भगत जी—भक्त लोग लगाते हैं बेटा।

जिज्ञासु—और कमर में रस्सी जैसा क्या बाँध रखा है?

भगत जी—अरे जनेऊ है बेवकूफ, सभी धार्मिक लोग पहनते हैं।

जिज्ञासु—और महाराज भक्त लोग ये घंटा, शंख, ढोल, मंजीरे आदि क्यों बजाते हैं और नाचते क्यों है?

भगत जी—इनसे भक्ति में आनन्द आता है, तल्लीनता बढ़ती हैं।

जिज्ञासु—महाराज, आनंद तो फिल्म संगीत और कैबरे में भी कम नहीं आता, दोनों में फर्क क्या है?

भगत जी—एक पूजा है तो दूसरा पाप।

जिज्ञासु—लेकिन महाराज है तो दोनों ही संगीत, है तो दोनों ही जगह अंग प्रदर्शन चाहे मन्दिर में हो या होटल में फिर तो पूजा और पाप में कोई अन्तर ही नहीं रहा।

भगत जी—ठहर···तू फिर बहका···

जिज्ञासु—अरे-अरे भगत जी, आप तो नाराज होने लगे। अच्छा महाराज, आपने इतना पूजा, पाठ, यज्ञ, जप आदि किये। क्या आपको परमात्मा मिला? क्या आप जीवन के लक्ष्य को जानते हैं? हम कौन हैं? कहाँ से आये कहाँ जाना है? क्या करना है?

भगत जी—ये सब तो नहीं जानते, लेकिन हमें तो भक्ति करने से मतलब।

जिज्ञासु—आपने कभी पल भर भी सोचा कि करते क्यों हैं?

भगत जी—क्यों करते हैं? अरे हमारे बाप-दादों ने यही किया, उनके बाप-दादों ने भी यही किया। हम भी यही कर रहे हैं। हमारी औलादें भी यही करेंगी। यही तो हमारी संस्कृति है, यही तो हमारी परम्परा है (क्रोधित होता है) ठहर नीच नास्तिक हमारी परम्परा को मिटाना चाहता है। (मारने को दौड़ता है जिज्ञासु बचने के लिए भागता है। भगत जी लौट आते है।)

अन्य भगत—भाग गया पागल। जाने कौन नास्तिक था, धर्म का दुश्मन। राम-राम-राम

भगत जी—चलो रे भक्तों शुरू करो। कैसे-कैसे अधर्मी भरे पड़े हैं। (भजन पुनः शुरू होता है। भक्त पुनः डोली उठाकर जिधर से आये थे उसी दिशा में लौट जाते हैं। साथ-साथ प्रकाश भी कम होता जाता है।)

(जिज्ञासु हाँफते हुये लौटता है)

जिज्ञासु—हे भगवान, कहाँ हो तुम। ये धर्म के ठेकेदार तो मुझे तुम से कभी नहीं मिलने देंगे। ये स्वयं ही नहीं जानते, फिर मुझे सच्ची राह कौन बतायेगा कि कहाँ से शुरू होती है।

(स्तम्भ के नीचे घुटनों पर कोहनी रख कर सर पकड़ कर बैठ जाता है। तभी स्टेज के एक तरफ से तीव्र प्रकाश होने लगता है। चर्च के घंटों की ध्वनि और अकर्डियन स्वर वातावरण में गूंज उठते हैं। एक क्रिश्चियन पादरी का प्रवेश होता है जो बैठे हुये जिज्ञासु के नजदीक आता है।)

पादरी—(कंधे पर हाथ रखकर जिज्ञासु को उठाते हुये) उठो मित्र दुःखी, न हो। जीसस ने तुम्हारे कष्ट मिटाने के लिये मुझे भेजा है।

जिज्ञासु—(आश्चर्य से) क्या सचमुच, मगर कैसे ?

पादरी—जीसस ने हमें तुम्हारी सेवा के लिए ही तो बनाया है। तुम्हें यीशुमसीह की शरण में शान्ति मिलेगी। (तभी पार्श्व में स्वर गूंज उठते हैं, और स्टेज के दूसरी तरफ से एक मौलवी साहब का प्रवेश होता है।)

मौलवी—सलामवालेकम मियाँ। कहाँ लिये जा रहे हो बरखुरदार को। अरे खुदा के फजल से अभी तो कौम की खिदमत के लिये हम जिन्दा हैं। (जिज्ञासु से मुखातिब होकर) तुम बड़े गमगीन मालूम पड़ते हो। चलो मियाँ, अल्ला ताला के साये में चलो।

जिज्ञासु—क्षमा करिये। मुझे आपकी बातों में कोई दिलचस्पी नहीं है। अगर बता सकते हो तो केवल इतना बता दीजिये कि मैं क्यूं पैदा हुआ, मेरे जीवन की सार्थकता किसमें है, सत्य क्या है ?

पादरी—चलो मित्र ईसाई हो जाओ। तुम्हारे हर प्रश्न का उत्तर तुम्हें बाईबल में मिल जायेगा। सभी धर्मों में ईसाई मत ही श्रेष्ठ है। तभी तो सारी धरती पर सबसे ज्यादा अनुयायी हमारे ही हैं।

मौलवी—लाहोल विला मियाँ। अरे आज तक सारे जहान में किसी और मजहब में ऐसी कौम परस्ती और इन्सानी जज्बात देखने में नहीं आते। बस एक है खुदा और एक है उसका रसूल मोहम्मद, जो तुम चाहते हो तुम्हारी हर जरूरत कुरान से पूरी हो जायेगी। चलो मियाँ, मुसलमान हो जाओ।

जिज्ञासु—ये क्या बहकी-बहकी बातें कर रहे हैं आप लोग। कौन सा धर्म, किस का धर्म। मुझे किसी धर्म का अनुयायी नहीं बनना है। मेरा तो सिर्फ एक ही धर्म है—इन्सानियत। मेरा तो एक ही मार्ग है, सत्य की तलाश। और सत्य सदा एक होता है, सत्य का धर्म एक होता है।

मैं पूछता हूँ क्या अल्लाह और ईश्वर अलग-अलग हैं। अनेक धर्मों के कारण ही तो आज सारी धरती टुकड़ों-टुकड़ों में विभाजित हो गई है। इन्सान-इंसान का दुश्मन बन गया है। पिछले ढाई हज़ार सालों में डेढ़ हजार लड़ाईयाँ किन लोगों के कारण लड़ी गई और इस पर आप इन्सानियत का दम भरते हैं। शर्म आनी चाहिये। हाँ इन्सानियत थी क्राइस्ट में, इन्सानियत थी मोहम्मद में। लेकिन उनके बाद तमाम पंडितों, मौलवियों और पादरियों ने सिवाय इन्सानियत को टुकड़े-टुकड़े करने के और कुछ नहीं किया। नहीं-नहीं। इन्सान को सिर्फ इन्सान ही रहने दो। उसे हिन्दू न बनाओ, मुसलमान न बनाओ, ईसाई न बनाओ। (पादरी व मौलवी दोनों आश्चर्य ओर क्रोध से जिज्ञासु को घूरते हैं। पार्श्व में सन्यास मार्ग की तरफ प्रकाश तेज होने लगता है और एक सन्यासी प्रवेश करता है हाथों में दण्ड-कमण्ड व शास्त्र आदि लिये हैं)

सन्यासी—शिवोहम्····· ····· ·····अहम् शिवोहम्·····

जिज्ञासु—आइये-आइये बस आपकी ही कसर रह गई थी। कौन हैं आप ?

सन्यासी—छुद्र प्राणी तुम हमें नहीं जानते।

हमें श्री-श्री १०८ जगद्गुरु भगवान् श्रीहूलाल जी कहते हैं।

जिज्ञासु—ओह तो आप स्वयं जगद्गुरु भगवान हैं। बड़ी खुशी हुई आप से मिलकर।

पादरी—ये तो कोई सिर फिरा मालूम होता है।

मौलवी—काफ़िरों की कमी नहीं है दुनिया में, या खुदा अब तो कयामत नज़दीक ही लगती है।

जिज्ञासु—क्यूं जगद्गुरु महोदय, इन्होंने तो पहचाना नहीं आपको, कुछ चमत्कार दिखाइये कि सब पहचान जायें।

सन्यासी—तुम्हें मेरे भगवान होने पर सन्देह है? लो मैं अभी तुम्हें स्वीटजरलैंड की बनी घड़ियाँ यहीं मँगवा देता हूँ।

जिज्ञासु—अरे नहीं भगवान महोदय, आप इतना कष्ट क्यों करते हैं। ये चमत्कार तो हमारे गली-मोहल्लों में छोटे-छोटे जादूगर ही दिखा देते हैं। बैसे आपका नम्बर कौन सा है?

सन्यासी—नम्बर क्या कहते हो छुद्र प्राणी।

जिज्ञासु—ठीक ही तो कहता हूँ भगवान महोदय इस समय धरती पर करोड़ों सन्यासी हैं और इनमें से तीन सौ खुद को भगवान समझते हैं। इनमें आपका नम्बर कौन सा है।

सन्यासी—तुम हमारा अपमान कर रहे हो छुद्र प्राणी। तुम नहीं जानते हमने अनेकों शास्त्रों का अध्ययन किया है। अनेकों उपाधियाँ हैं हमारे पास, अब बोलो कि क्या चाहते हो?

जिज्ञासु—घोर आश्चर्य है भगवान महोदय, हमने तो सुना था कि परमात्मा ज्ञान के सागर होते हैं। परमात्मा के पास मनुष्य रचित शास्त्रों की उपाधियाँ होती हैं ये तो हमने आज ही जाना। जहां तक चाहने का प्रश्न है तो मैं जानना चाहता हूँ कि मैं कौन हूँ? कहाँ से आया? मुझे क्या करना है? जीवन की सार्थकता क्या है?

सन्यासी—छुद्र प्राणी, तुम जानना ही चाहते हो तो सुनो—शास्त्रों में लिखा है कि···

जिज्ञासु—ठहरिये-ठहरिये भगवान महोदय शास्त्रों का ज्ञान तो हमारे पास भी बहुत है। लेकिन उससे हमें मिला क्या? यदि शास्त्र ही सच्चे होते तो आज सारी सृष्टि इतनी दुःखी और अशांत क्यों होती?

पादरी—आखिर मित्र तुम ऐसा क्या खोज रहे हो जो तुम्हें नहीं मिल रहा है?

जिज्ञासु—मैं सत्य और जीवन की सार्थकता खोज रहा हूँ।

मौलवी—यदि तुम्हें सत्य का ज्ञान हो जाये, तुम जीवन की सार्थकता खोज लो, तब तुम क्या करोगे?

जिज्ञासु—मैं उस सत्य के प्रकाश को जीवन की सार्थकता के संदेश को हर इन्सान तक पहुँचाऊँगा जिससे सब मनुष्य पाखंडियों के जाल से मुक्त हो जायें। हर इन्सान का दिल मन्दिर हो जाये, मस्जिद हो जाये, गिरजा हो जाये।

मौलवी—सुना-सुना आपने? क्या कहा इसने? कि हर इन्सान का दिल मन्दिर हो जाये, मस्जिद हो जाये, गिरजा हो जाये।

पादरी—फिर-फिर हमारा क्या होगा?

सन्यासी—हमें तो कोई कौड़ियों के मोल नहीं पूछेगा।

मौलवी—नहीं ये आदमी ठीक नहीं है। खतरा है हमारे वजूद के लिये। यदि ये सत्य तक पहुँच गया तो हम तो बर्बाद हो जायेंगे।

(तीनों जिज्ञासु को घूरते हैं।)

तीनों—नहीं। हमारे रहते तुम सत्य तक कभी नहीं पहुँच सकोगे।

(तीनों जोरों से अट्हास करते हुए जिज्ञासु की तरफ बढ़ते हैं)

जिज्ञासु—हे परमात्मा, तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो।

(तीनों उसे मारने लगते हैं। प्रकाश मद्धम होते-होते पूर्ण अंधकार छा जाता है। तीनों का अट्हास निरन्तर गूंजता रहता है। फिर सन्नाटा)

कुछ समय बाद पुनः स्पाट लाईट का प्रकाश घायल पड़े जिज्ञासु पर पड़ना शुरू होता है, जो तीव्र होकर केवल जिज्ञासु पर ही केन्द्रित हो जाता है। जिज्ञासु कराहने लगाता है)

जिज्ञासु—आह, हे भगवान। क्या सत्य की तलाश करने वालों का सदा यही अंजाम होता रहेगा क्या इस धरती पर कभी सत्य का उजियारा नहीं फैलेगा। क्या मेरे प्रश्न अनुत्तरित रह जायेंगे, भगवान। क्या जीवन सिर्फ मौत के लिये है, क्या इन्सान को कभी सच्चा मार्ग नहीं मिलेगा, प्रभु—दया करो, भगवान। दया करो··· निराश होकर गिर पड़ता है। वातावरण में ध्वनि गूंजती है।

"वेद शास्त्र, भक्ति धर्मों का
छाया घोर अंधियारा,
विषय-विकार हरो ज्योतिर्मय
जग में हो उजियारा···

(तभी वातावरण में मधुर बाँसुरी की धुन गूंज उठती है। स्पाट लाईट का प्रकाश फरिश्तों के समान आती हुई एक ब्रह्माकुमारी पर पड़ता है, जो आकर बड़ी मीठी वाणी में निराश पड़े जिज्ञासु को ईश्वरीय संदेश सुनाती है।)

ब्रह्माकुमारी—परम प्यारे, परमपिता परमात्मा "शिव" की सन्तान, प्रिय आत्मन् उठो, मैं तुम्हारे लिये उस परमात्मा "शिव" का दिव्य सन्देश लाई हूँ। उठो आत्मन्।

जिज्ञासु—(कराहकर उठते हुये) कौन हैं आप? कोई परी तो नहीं?

ब्रह्माकुमारी—नहीं भैया। मैं तो उस परमपिता परमात्मा शिव द्वारा प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम से दिये जाने वाले ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग का अभ्यास करने वाली पुरुषार्थिनी, ब्रह्माकुमारी हूँ। उठो भैया, परमात्मा प्राप्ति की राह तो तुम्हारे अंतरमन से ही शुरू होती है। तुम बाहर कहाँ खोज रहे हो? अब देहभान को त्याग कर, स्वयं को उस निराकार ज्योति बिन्दू परमात्मा शिव की सन्तान आत्मा निश्चय करके उस परमपिता को याद करो तो तुम सर्व दुःखों व विकारों के शिकंजे से जन्म-जन्मान्तर के लिये छूट जाओगे।

जिज्ञासु—मीठी बहन, क्या मेरा जीवन सार्थक हो जायेगा?

ब्रह्माकुमारी—हाँ भैया। इस जीवन की सार्थकता तो सम्पूर्ण पवित्र और राजयोगी बन कर सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, सम्पूर्ण अहिंसक नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनने में ही है।

जिज्ञासु—सत्य प्राप्ति का, ईश्वर प्राप्ति का मार्ग इतना सरल, इतना आसान विश्वास नहीं होता बहन।

ब्रह्माकुमारी—विश्वास मत करो भैया। अंधविश्वास के कारण ही तो इतना भटकाव फैला हुआ है। अब तो स्वयं अनुभूति करो। समय न गंवाओ भैया। पहले ही कितनी देर हो चुकी है। गफ़लत न करो।

आओ, स्वयं को ज्योतिबिन्दु आत्मा निश्चय कर अपने स्वधर्म में टिक कर उस परम प्यारे शिव परमात्मा की याद में बैठो। सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम, और पवित्रता की स्वयं अनुभूति करो। आओ भैया।

(जिज्ञासु को योग में बिठाती है) तभी वातावरण में तीव्र प्रकाश व बिजली के कड़कने जैसी ध्वनि गूंजती है। फिर तीव्र, रक्तिम प्रकाश चारों ओर फैल जाता है और ज्योतिमय शिव का अवतरण होता है। पार्श्व में गीत बज उठता है—अन्तरमन की ज्योति लगा लो (पुरुष—स्वर)

०:—:०

"चलो वतन का सैर करें

ब्र० कु० रिखी किशोर, रायपुर

बाप-दादा का साथी बनकर, चलो वतन का सैर करें ।।
प्यारा बाबा आया बनाने, हमको उड़ता पंछी,
देहभान की धरणी छोड़े, न रहें अब बंदी।
पांच तत्त्व का है यह पुतला, विकारी और विनाशी,
आत्म निश्चय से बने फरिश्ता, सूक्ष्म वतन के वासी ।।
शक्तिशाली मन के द्वारा, वसुन्धरा से उड़ चलें,
बाप-दादा का साथी बनकर, चलो वतन का सैर करें।।१।।

आयेंगे तूफान हज़ारों, लेकिन तोफा लायेंगे,
विघ्नों-बाधाओं के पहाड़, धरती में मिल जायेंगे।
पांच विकार सेवक बनेगा, प्रकृति बनेगी दासी,
तृप्त होंगी भक्त आत्माएं, अभी बहुत है प्यासी ।।
डबल लाइट का रूप बना, इस जग का उद्धार करें,
बाप-दादा का साथी बनकर, चलो वतन का सैर करें ।।२।।

तमोप्रधान बन गयी है दुनिया, है कितनी विषैली,
चहुं ओर इस धरा पर, विकार जाल है फैली।
खेल खेलते चारों युगों में, हुई आत्मा काली,
जागो और जगाओ भाई, सृष्टि बदलने वाली ।।
मास्टर पवित्रता का सागर बन, फिर जग को पावन करें,
बाप-दादा का साथी बनकर, चलो वतन का सैर करें ।।३।।

निराकार साकार में आये, प्रीत का रीत निभाने,
पूर्ण पवित्र, बिन्दु बनाकर, वापस घर ले जाने।
सेकेण्ड में परिवर्तन करना, बाबा हमें सिखाये,
परिवर्तनशील इस दुनिया से, अब न दिल लगायें ।।
सम्पूर्ण बनें सर्व गुणों से, एक भी अवगुण नहीं रहें,
बाप-दादा का साथी बनकर, चलो वतन का सैर करें ।।४।।
चलो वतन का सैर करें ।।

मण्डी गिदड़वाहा में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन भ्राता डॉ० कृष्ण कुमार जी कर रहे हैं, साथ में डॉ० साहब की धर्मपत्नी व ब्र० कु० शीला बहन दिखाई दे रही हैं

सचित्र समाचार

भरूच सेवा केन्द्र की ओर से गाँव-गाँव की सेवा के लिए एक ट्रक द्वारा चलती-फिरती प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। आध्यात्मिक प्रदर्शनी ट्रक में लगाई गयी है इस तरह ६०० गाँव में ईश्वरीय सन्देश देने का कार्य हो चुका है

लखनऊ में महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया वहां की प्रतिष्ठित महिला विद्या बिन्धू भाषण कर रही हैं । मंच पर अन्य ब्र० कु० बहनें बैठी हैं

भावनगर सेवा केन्द्र द्वारा कणबी-वाड पिस्तार में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में भ्राता गोवर्धन भाई पटेल का ब्र० कु० गीता व ब्र० कु० नैना स्वागत कर रही हैं

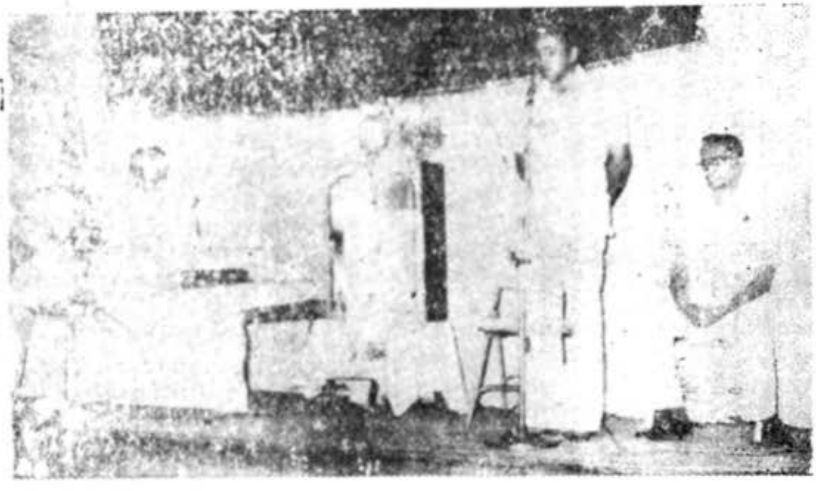

भाव नगर सेवा केन्द्र द्वारा टाऊन हाल में आयोजित प्रवचन कार्यक्रम में म्यूनिसिपल कारपोरेशन के मेयर भ्राता रमणीक भाई जी अपने विचार पेश कर रहे हैं, मंच पर ब्र० कु० गीता बहन व गोविन्द भाई बठे नज़र आ रहे हैं

यह चित्र न्यू शाहगंज आगरा में हुई चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन के सुअवसर का है, जिसका उद्घाटन भ्राता जे० एस० श्री वास्तवा (न्यायाधीश) के द्वारा सम्पन्न हुआ ,साथ में ब्र० कु० विमला जी एवं ब्र० कु० सीता जी व अन्य बहन-भाई दिखाई दे रहे हैं

अमूल्य हीरे जो कौड़ियों के भाव मिलते हैं

लेखिका—ब्र० कु० आशा, भीलवाड़ा

शीर्षक बड़ा विचित्र है। ऐसा कौन-सा स्थान है, जहां अमूल्य हीरे भी कौड़ियों में ही बिकते हैं। तो कहा जावेगा धन्य है "कलियुग महाराज" जो आपके राज्य में अमूल्य हीरे कौड़ियों में मिले हैं। परन्तु यह तो आश्चर्य है, आज इस समय तो मिट्टी, जल, वायु, अग्नि और आकाश भी कीमती हो चुका है। लोहा तो कीमती हुआ सो हुआ किन्तु आज तो मिट्टी भी कौड़ियों में नहीं मिल सकती ! और फिर "अमूल्य हीरे" और "कौड़ियों में", वह भी "कलियुग महाराज" के शासन में !

किन्तु आश्चर्य की बात नहीं, घटना सत्य और शाश्वत है। जिनके राज्य में कभी सूर्यास्त होता नहीं था, उसी समय साधारण परिवार में पैदा हुआ एक गांवड़े का व्यक्ति अपनी तेजस्विता और प्रतिभावान चरित्र, साथ ही तीक्ष्ण बुद्धि से कलकत्ते में आकर प्रसिद्ध जौहरी बन गया। इस पद्मापद्म भाग्यशाली मूर्ति ने मानव जीवन के मार्ग में दौड़ लगाते हुए अचानक सन् १९३५ के लगभग एक अमूल्य हीरों की अविनाशी खान को पा लिया !

इस भागीरथ ने सन् १९३७ तक बनावटी हीरों का व्यापार बन्द कर अविनाशी हीरों का व्यापार प्रारम्भ कर दिया। चन्द दिनों में ही इसने दादा से "जगत् बाबा" का पद पा लिया। इस अद्भुत व्यापार ने उस समय के विश्व प्रसिद्ध जौहरी लखिराज बाबू को मिट्टी में मिलाकर "प्रजापिता ब्रह्मा' जिन्हें प्यार से उनके ग्राहक "बाबा" कहते हैं, प्रत्यक्ष कर दिया।

उदार हृदय, सम्पन्न मूर्ति पिता-श्री ब्रह्मा ने अपने वानप्रस्थी समय में भी इस खान से प्रतिदिन अनगिनत हीरे प्राप्त किए। बढ़ती हुई महंगाई और बेरोजगारी के समय में इस दिव्य-मूर्ति ने दयालु हृदय एवं दीनबंधु का स्वरूप धारण किया ! हर मानव को सम्पन्न-स्वरूप में देखने की अभिलाषा रखने वाले इस विचित्र जौहरी ने प्रत्येक को अपने साथ कौड़ियों के बदले हीरे का व्यापार करने को आह्वान किया ! तब अलौकिक व्यापार में ठगाकर हतोत्साही हुए भारत ही नहीं किन्तु विश्व के व्यापारियों ने आपके निमंत्रण का स्वागत किया। आज विश्व में इस प्रकार की लगभग ७५० दुकानें हो चुकी हैं। दुकानों पर प्रतिदिन सौदा करने वालों की संख्या भी लाखों में बढ़ गयी है। आपकी प्रमुख दुकान का भी प्रतिदिन स्वरूप बदलता ही जा रहा है। जो एक समय छोटी सी दुकान थी, आज वह "भवन" का रूप ले चुकी है। माउण्ट-आबू, राजस्थान का अब यह गर्व बन चुका है। यहां के हर बच्चे की जिह्वा पर "पाण्डव-भवन" शब्द छप चुका है !

निरंहकारी, शांति की मूर्ति, उदार हृदय इस जौहरी ने यहां अपनी हड्डियां भी समा दी हैं ! एकता के सूत्र में बंधे आपके साझीदार आज भी कौड़ियों के बदले अमूल्य हीरों का व्यापार चलाकर आपकी गौरव-मयी परम्परा को बनाए हुए हैं।

यह जो हीरों की खान है, वह है चैतन्य ज्योति-बिन्दु परमात्मा शिव ! पिता-श्री ब्रह्मा ने प्रतिदिन आपसे जो ज्ञान, गुण और शक्तियों के खज़ाने प्राप्त किए, वह सब अमूल्य किन्तु चैतन्य हीरे हैं। हर मानव से पांच विकारों रूपी कौड़ियां प्राप्त कर आपने सदा उन्हें खुशी-खुशी ये हीरे इतनी मात्रा में दिए कि जिनसे प्रत्येक ने २१ जन्म तक सम्पन्न-स्वरूप बनकर रहने की समृद्धि पा ली है !

—: ० :—

ये लोग मेरी बात क्यों नहीं मानते

ब्र० कु० उत्तम, मधुबन, आबू

जिम्मेदारी का बोझ ढोते हुए शान्ति ने बड़े ही विस्मित भाव से कहा—"ये लोग मेरी बात क्यों नहीं मानते । अगर ये सब मेरी बात मान लें तो हमारा ये संगठन कितना अच्छा हो जाए, सबकी कितनी उन्नति हो और हम सब शिव बाबा के कार्य में कितने सहयोगी बन जाएं। परन्तु न जाने क्यों, कइयों ने तो कसम खा रक्खी है कि हम इनकी बात सुनेंगे ही नहीं।"

परन्तु हरेक शान्त चित्त होकर अपने मन से तो पूछे कि हे मेरे मन, "तू भगवान की बात कितनी मानता है।" तूने बहुत बार कहा था कि हे प्रभु, जब तुम इस धरा पर आओगे तो मैं तुम्हारी ही बात मानूंगा। भला कौन मूर्ख होगा जो भगवान की भी न मानें। भगवान की आज्ञा छोड़, वह किसकी आज्ञा में भला समझता है ?

तो जबकि हम, स्वयं भगवान की भी अवज्ञा करते हैं तो हम कैसे हक रखते हैं कि हमारी भी बात सभी को माननी चाहिए। जो भगवान को नहीं मानता, उसकी भला दूसरे क्या मानेंगे। जिसका अपने मन पर नियन्त्रण नहीं, वह भला संगठन पर कैसे नियन्त्रण करेगा । अतः सर्वप्रथम एक अच्छे पुरुषार्थी को अच्छी तरह देखना चाहिए कि पहले उसकी कर्मेन्द्रियां उसकी आज्ञा मानती हैं। यह भी तब ही होगा, जब हम भगवान की आज्ञा मानते होंगे ! अगर हमारे मन में भगवान की आज्ञाओं के लिए सत्कार होगा, तो हमारी कर्मेन्द्रियां निश्चित ही हमारे अधिकार में होगी। क्योंकि ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन करने से मन में अथाह शक्तियां आ जाती हैं। ईश्वरीय आज्ञाओं के पालन से मन इतना सन्तुष्ट हो जाता है कि वह कहीं भी आकर्षित नहीं होता। ईश्वरीय महावाक्यों से ही कानों को इतना रस मिलने लगता है कि उसे अन्य रसों में आकर्षण नहीं होता।

संगठन में ये परम आवश्यक है—"एक ने कहा, दूसरे ने माना" अगर किसी संगठन में ऐसा नहीं होता तो उसकी सफ़लता मझधार में पड़ जाती है। वहां आपसी तनाव व अशान्ति का वातावरण अन्य आत्माओं को भगवान से दूर करता रहेगा। न ही वहां आपसी सम्मान की भावना रहेगी। संगठन बिखरा-बिखरा सा लगेगा। "अपनी अपनी ढपली, अपना अपना राग" वाली कहावत चरितार्थ रहेगी और ऐसे संगठन से कोई भी महान कार्य करने की आशा नहीं रखी जा सकेगी।

अतः भगवान के नव-युग स्थापना के कार्य में पूर्ण सहयोगी बनने के लिए, दूसरी आत्माओं को स्वयं से हल्का रखना व 'हाँ' जी का पाठपक्का करना आवश्यक है। दूसरों को हल्का रखने वाले स्वयं भी हल्के रहेंगे और ईश्वरीय कार्य में विघ्न रूप न बनकर सदा ही सब के सहयोगी बने रहेंगे। इसलिए सदा याद रखना चाहिए—

"Be light & do light."

आध्यात्मिक उन्नति के लिये ज्ञानामृत और
वर्ल्ड रीन्युवल के सदस्य बनिये और बनाइये

तीर्थराज 'आबू-पर्वत'

ब्र० कु० रामसिंह त्यागी, हाथरस (अलीगढ़)

भारत को देवभूमि के रूप में माना जाता है। कहा जाता है ईसा से ३००० वर्ष पहले भारत में देवी देवतायें राज्य करते थे, भारत सोने की चिड़िया था। आज भी धार्मिक दृष्टिकोण से भारत का सारे विश्व में धर्मगुरु का स्थान है। विभिन्न तीर्थस्थलों से सुशोभित यह प्यारा भारत सारे विश्व में अपनी अनोखी छटा विकीर्ण कर रहा है। भारत ही परमपिता परमात्मा की अवतरण भूमि है। यही कारण है कि भारत का कोना-कोना. परमपिता परमात्मा की यादगार प्रतिमाओं से भरा हुआ है। भारत के सब तीर्थस्थानों में 'आबू-पर्वत' सबसे महान तीर्थ स्थान है।

विशाल मरुधारा प्रदेश की दक्षिण-पश्चिम गोद में गर्वोन्नत, अरावली दुबक कर कुछ योजन बाद, अंगड़ाई-सी उभर कर गगनचुम्बी आकार में प्रगट होती है जिसे 'आबू' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। आबू पर्वत २४-३६° अक्षांश उत्तर एवं ६२-४५° देशांतर पूर्व में स्थित है। यह पर्वत अरावली पर्वतमाला का एक भाग है और लगभग ३० किलोमीटर लम्बा १२ कि० मी० चौड़ा है। लेकिन इसका उन्नत भाग १६ कि० मी० लम्बा और ३ से ६ कि० मी० चौड़ा है। इस पर्वत की सामान्यत: ऊँचाई ४००० फुट है। जिसका सर्वोच्च स्थल गुरु-शिखर है। जो ५६५३ फुट ऊँचा है। यह शिखर हिमालय और दक्षिण भारत के नीलगिरि पर्वत के बीच सबसे ऊँचा है। राजस्थान की जिन पहाड़ियों पर दूर-दूर तक ठंडक और हरियाली का नामो-निशान नहीं उन्हीं के एक सिरे पर बसा यह पर्वतीय स्थल अपने लावण्य और नयनाभिराम सौन्दर्य से परिपूर्ण आकर्षण का केन्द्र बना है।

राजस्थान के सिरोही जिले में स्थित आबू पर्वत ने मुझे भी अपनी दुलार भरी गोद में पालना पाने का सौभाग्य प्रदान किया है। आबूरोड रेलवे स्टेशन से उतर कर बस द्वारा आबू की दुर्गम चढ़ाई की ओर अग्रसर हुआ। घने वृक्षों व फूलों वाली झाड़ियों में से छन-छन कर आने वाली शीतल समीर मन को मुग्ध करती गयी। सर्पाकार बलखाती हुई सड़क, ऊपर पर्वत माला, नीचे गहन गहराई, पेड़ों के झुरमुटों में से मनोहर पर्वतीय दृश्य मन को लुभाने लगे। आबू पर्वत पर पहुंचकर मैंने श्वेत संगमरमर के पत्थरों से निर्मित अतीत काल की मूर्ति कला कौशल्य की गरिमा का वर्णन करते हुए दिलवाला जैनमन्दिर को देखा। नाना प्रकार के भावों में देवी-देवतायें, नृत्य करती हुई देवांगनायें, पशुपक्षी फूल-पत्ती आदि की पत्थरों पर सजीवसम बनावट चित्रकला व मूर्ति कला का अद्वितीय सौन्दर्य बिखेर रही है।

तत्पश्चात् प्राचीन एवं प्रसिद्ध 'अचलगढ़' नामक ऐतिहासिक स्थान पर भी जाना हुआ। दिलवाड़ा मन्दिर के कुछ आगे चलकर वृक्षों और लताओं से आच्छादित प्रकृति के शान्त वातावरण में कुंवारी कन्या के मन्दिर' में भी जाना हुआ। आराध्य देवों की विभिन्न यादगारों सम्पन्न यहाँ का शान्त व पावन वातावरण हमारी प्राचीन संस्कृति व गौरव की प्रतिष्ठा लिए हर मानव को बरबस ही अपनी ओर खींच लेता है।

शाम के समय मेरे पग उस सुरम्य व रमणीक स्थान पर पहुंचे जहाँ की सुषमा अपने में एक निराली ही देन थी। चारों ओर से हरे भरे पेड़ों की कतारें तथा ऊँची-ऊँची पहाड़ियों से घिरी नयनाभि-

राम नक्की झील की छटा देखते ही बनती थी। तदुपरान्त सूर्यास्त के मनोरम दृश्य को देखने जा रहे एक जन समूह के साथ मैं भी उस जगह पर पहुंचा जिसे Sunset Point (सूर्यास्त-स्थल) के नाम से जाना जाता है। क्षितिजीय सूर्यास्त के दृश्य देखकर मेरे मन में अविस्मरणीय आनन्द का स्रोत बहने लगा।

सूर्यास्त के दृश्य को निहार कर मैं प्रभू की अनोखी लीला का गुणगान करने लगा। दिल से यह आवाज निकलने लगी—'हे प्रभू! आपने हमारे लिए कितने सुखद साधन दिये हैं। ओहो आपने विश्व को रोशन करने सूर्य, चन्द्रमा और सितारे दिये जो समय चक्र का बोध कराते हैं। शीतल मन्द सुगन्ध समीर ने मुझे प्रभु प्रेम से पुलकित कर दिया, अचानक एक प्रश्न ने मेरे मन को झंकृत कर दिया—"आखिर इन सबका रचयिता कौन है! और वह कहाँ रहता है, उससे मिलन कैसे हो सकता है।" इन्हीं विचारों में खोया हुआ मैं सन्सेट प्वाइंट से वापस हो रहा था, अचानक एक मधुर ध्वनि मेरे कानों में अमृत रस भरने लगी—

"शिव दर्शन है फिर सृष्टि चक्र में,
विश्व-दर्शन है आबू के आँचल में।
आबू शैल शिखर सुन्दर है,
दृश्य यहाँ के सब मनहर हैं॥
राजयोग तपस्या घर है,
विश्व परिवर्तन हुआ सफल है॥
कल्प-कल्प शिव आते भारत में,
शिव दर्शन.....।
आबू शिव अवतरण भूमि है,
सत्य धर्म प्रचार भूमि है।
परमपिता की प्यार भूमि है,
सतयुग की आधार भूमि है॥
राज़ यही है गुरु शिखर और,
अचलगढ़ में, शिव दर्शन.....॥"

मन को लुभाने वाली उस मधुर ध्वनि को सुनने मैं आगे चल पड़ा। समीप पहुंचकर जाना कि 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय' द्वारा स्थापित एक विशाल 'संग्रहालय' है जिसके मुख्य द्वार पर अंकित पवित्र बनो, योगी बनो' के प्रेरणादायक शब्दों को पढ़कर मेरे मन में पवित्र लहरें उठने लगी। मुख्य द्वार पर अंकित Gate way to Paradise शब्द संग्रहालय के लक्ष्य को स्पष्ट कर रहे थे। मुख्य द्वार में प्रवेश करते ही लक्ष्मी-नारायण की सुन्दर झाँकियों का दर्शन कर मेरा मन मयूर नाच उठा। झाँकी के ऊपरी भाग पर अंकित 'स्वर्ग हमारा मन भावन होगा' शब्दों से स्वर्ग-रचयिता परमात्मा की स्वर्णिम दुनिया में जाने की तीव्र उत्कण्ठा जाग उठी। संग्रहालय के अन्दर पहुंचकर श्वेत वस्त्रधारी महिला ने चित्रों तथा झाँकियों में समाहित रहस्यों का स्पष्टीकरण किया।

यह स्पष्टीकरण सुन मेरी कौतूहल पूर्ण जिज्ञासा उत्तरोत्तर बढ़ने लगी ऐसा निराला व स्पष्ट ज्ञान तो सचमुच अद्भुत व अद्वितीय ही था। मेरे विवेक ने अज्ञान नींद छोड़ अंगड़ाई ली तथा जाना कि मैं कौन हूँ? किसकी सन्तान हूँ? तथा कहाँ से आया हूँ? स्पष्टीकरण की मुख्य बातें इस प्रकार थी—

(i) परमपिता परमात्मा नाम-रूप से न्यारा नहीं है उसका नाम शिव तथा रूप अति सूक्ष्म बिन्दू रूप है।

(ii) परमपिता परमात्मा सर्व आत्माओं के पिता हैं।

(iv) परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नयी दैवी सृष्टि की रचना रच रहे हैं।

(v) कल्प की आयु ५००० वर्ष हैं। यह विश्व नाटक अनादि अविनाशी है जो हर ५००० वर्ष बाद हूबहू पुनरावृत्त होता रहता है।

(vi) हम शरीर से भिन्न चैतन्य आत्मायें आपस में भाई-भाई हैं।

(vii) मनुष्यात्मा पशु-पक्षी आदि ८४ लाख योनियों में भ्रमण नहीं करती है।

(viii) वर्तमान नर्कमय दुनिया को स्वर्ग बनाने के लिए परमात्मा ने अविनाशी रुद्र-ज्ञान-यज्ञ रचा

है जिसमें ५ विकार (काम,क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) की आहुती देनी है।

(ix) गीता का भगवान कृष्ण नहीं स्वयं पिता परमात्मा निराकार शिव हैं।

(x) गीता ज्ञान द्वापर युग में नहीं दिया गया अपितु वर्तमान समय कलियुग के अन्त में दिया जा रहा है।

(xi) कोई भी देहधारी (गुरु-गोसाईं) किसी को गति-सद्गति नहीं दे सकता।

(xii) गंगा-स्नान करने से पाप नहीं समाप्त हो सकते हैं। वर्तमान समय ज्ञान सागर पिता परमात्मा शिव द्वारा ब्रह्मा मुख से दिये जा रहे ईश्वरीय ज्ञान में स्नान करने से विकर्म (पाप) विनाश होते हैं।

संग्रहालय को देखने के बाद मुझे एक विशाल 'Meditation Hall' (योग-कक्ष) में ले जाया गया। राजयोग की इस अद्भुत विधि से मैं स्वयं को शरीर में विराजमान चैतन्य शक्ति आत्मा अनुभव करता अतीन्द्रिय सुख के सागर में समा गया। यह मेरी जीवन की वह स्वर्णिम प्रथम घड़ी थी जब मुझे आत्म बोध हुआ। तत्पश्चात् मेरी बढ़ती हुई अभिरुचि को देख मुझे नक्की झील के समीप स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के मुख्यालय 'पाण्डव-भवन' को देखने के लिए आमंत्रित किया गया। संग्रहालय से वापस होते मैं प्रभु प्रेम से ओत-प्रोत अपने विश्राम स्थल पर पहुंचा। देखे गये चित्र व झाकियों के दृश्य मेरे मानस पटल पर घूम रहे थे। राजयोग के आधार पर बताई गई 'सोने की विधि' अनुसार मैं स्वयं को प्रकाश के शरीर में फ़रिश्ता अनुभव करते परमात्मा की दुलार भरी याद की गोद में समा गया।

मेरी आशाओं के दीपक जगाने वह उषा कालीन प्रातः भी आ पहुंची। इस पावन अमृतवेले के समय राजयोग के अभ्यास से मेरा मन मयूर नाच उठा। और मेरे कदम परमपिता परमात्मा की अवतरण भूमि 'पाण्डव भवन' का दर्शन करने चल पड़े। श्वेत वर्ण से सुशोभित 'पाण्डव-भवन' के पवित्र व शान्त वातावरण से स्पर्श कर आ रही शीतल समीर जीवन की थकान हरने लगी। भवन के मुख्य द्वार में प्रवेश करते ही मैंने सामने चित्रित स्वर्णिम युग के शुभागमन का सन्देश दे रहे श्रीकृष्ण को देखा तथा समीप अंकित सूचनापट के अनुसार यह जाना कि यह विद्यालय देश-विदेश में स्थापित ७५० सेवा-केन्द्रों द्वारा जन-जन को परमात्मा के अवतरण का दिव्य-सन्देश दे रहा है।

परमात्मा की अवतरण भूमि पाण्डव-भवन को देखकर मेरे जीवन में हरियाली आ गई। धन्य-धन्य हैं वे आत्मायें जो इस आबू-पर्वत के आँचल में स्थित पाण्डव-भवन में ब्रह्मा तन में पधारे पिता परमात्मा शिव को पहचान वरदानों के अखुट खजानों से भरपूर हो रही हैं। वे दिन दूर नहीं हैं जब सारा विश्व इस महान भूमि पर पधारे परमप्रिय परमात्मा निराकार शिव के दिव्य सन्देश को प्राप्त कर अपने जीवन को दिव्य व महान बनाने की प्रेरणा स्रोत आबू भूमि को तीर्थराज मानकर नत-मस्तक होगा।

—: सूचना :—

ज्ञानामृत का नया वर्ष जुलाई मास से आरम्भ हो रहा है। कृपया २० जून तक सदस्यों की संख्या तथा शुल्क भेज देवें। व्यवस्थापक

"आबू अब्बा" शब्द मात्र ही सुख शान्ति का सार है

ब्र० कु० अमर चन्द गौतम

मन्थन करो विचार है, ब्रह्मातन आधार है।
'आबू-अब्बा' शब्द विश्व की सुख शान्ति का सार है!
संभव हूँ मैं संगम युग में गीता-ज्ञान सुनाने को
अपने मीठे बच्चों का फिर से बैकुण्ठ बसाने को!
यह दुनियाँ तो बिमार है। आबू-अब्बा.....

ब्रह्मा मेरा लवली बच्चा, तुम भी मीठे बच्चे हो!
राज्य तुम्हारा ही होगा, गर सब निश्चय के पक्के हो।
तुम्हें पूर्ण अधिकार है! आबू-अब्बा.....

ब्रह्मा ही सच्चा अर्जुन है, ज्ञानार्जन शुभ कर्म किया।
वही भाग्यशाली रथ भी है जिसे मैंने स्वीकार किया!
बना मेरा श्रृंगार है। आबू-अब्बा.....

सच्चे ब्राह्मण सुनें सभी, तुम ही संगम पर पाण्डव हो।
विश्वामित्र, तुम्हीं हो लक्ष्मण, शिव बाबा के ताण्डव हो!
माया अब लाचार है। आबू-अब्बा.....

गफ़लत नहीं करो तुम बच्चे! माया मार भगानी है।
खाद पड़ गयी जो द्वापर से, संगम युगे जलानी है।
छोड़ो, काम विकार है। आबू-अब्बा.....

सोते रहे अभी भी बच्चो! तो पीछे पछताओगे।
वेट रख लिया सिर पर भारी, कैसे रेस लगाओगे।?
छोड़ दो ये विस्तार है। आबू-अब्बा.....

याद करो नित अमृत बेले, अब राजाई पानी है।
अपने ही शुभ संकल्पों से, धरती स्वर्ग बनानी है!!
सुस्ती छठा विकार है! आबू-अब्बा.....

फ़ालो फ़ादर करते रहना, माया से बच जाओगे!
निराकार बन प्रैक्टिस करना, स्वीट होम आ जाओगे!
शान्ति धाम निराकार है! आबू-अब्बा.....

मामेकं बस याद करो तुम, पर चिन्तन की बात नहीं।
वरसा इस विधि पाजाओगे, संशय की दरकार नहीं!
सतयुग फिर साकार है! आबू-अब्बा.....

आओ बच्चो! मीठे बच्चो। तुम्हें शीघ्र ही चलना है।
गुण दैवी सब धारण करलो, जो संगम का गहना है!!
अच्छा! सुसमाचार है। आबू-अब्बा.....

संगत लाती है रंगत

ब्र० कु० सरोज, अजमेर

एक राजा था। उसके राज्य में एक शिकारी को जंगल में अत्यन्त सुन्दर, समान वय के दो तोते के बच्चे मिले। शिकारी ने उन्हें बेचना चाहा। वह राजमहल में आया। तोते बहुत सुन्दर थे, राजा ने उन्हें खरीद लिया। दोनों के लिए दो सोने के पिंजरे बनवाये गये। एक पिंजरे को अन्तःपुर में टाँक दिया गया, और दूसरे पिंजरे को अपने अस्तबल में। अस्तबल में घोड़े की मालिश करने वाला घोड़े को अनेक गालियाँ दिया करता था। तू गधा है, चल पीछे हट, इत्यादि। अन्तःपुर में सब बहुत आदर सत्कार व तमीज़ के साथ बातें करते थे, आने वाले का स्वागत करते थे—आइये, पधारिये, आपका स्वागत है आदि। दोनों तोते जैसी बातें सुनते थे वैसी ही सीख गये। एक दिन राजा उन दोनों तोतों का निरीक्षण करने गये। अस्तबल वाले तोते ने राजा के आते ही कहा—तू गधा है, चल पीछे हट! राजा को बुरा लगा। इतनी सुविधायें, उत्तम खानपान उपलब्ध कराने पर भी यह मुझे गधा कहता है। फिर वह अन्तःपुर वाले तोते के पास गए। उसने राजा को देखते ही कहा—आइये! पधारिये! आपका स्वागत है। राजा खुश हो गया। उसने सोचा दोनों में इतना अन्तर क्यों? राजा ने जाँच की दृष्टि से अस्तबल वाले तोते के पिंजरे को अन्तःपुर में व अन्तःपुर वाले तोते के पिंजरे को अस्तबल में टंगवा दिया। कुछ महिने बाद राजा पुनः तोतों का निरीक्षण करने पहुंचा तो अस्तबल के पिंजरे वाला तोता अन्तःपुर का पाठ व सभ्यता भूल गाली दे रहा था तथा अन्तःपुर वाला तोता पहले की सीखी गालियाँ भूल राजा का स्वागत कर रहा था। राजा समझ गया कि यह संगति का असर है, जैसी संगति वैसे ही संस्कार बनते हैं। तभी तो एक कवि ने कहा—

एक ही माता, एक ही पिता, एक ही तरुवर बसे।
अरे, अरे राजा, संगत इसकी डसे।

एक ही पेड़ पर एक ही मातपिता से उत्पन्न होने के बाद अलग अलग संगत से संस्कार पड़ते हैं। इसी के परिणामस्वरूप एक में श्रेष्ठ संस्कार व एक में कुसंस्कार बने।

मानव जीवन में संस्कारों का बहुत महत्त्व है। आत्मा में श्रेष्ठ संग से श्रेष्ठ संस्कार भरते जाते हैं। वह मूल्यवान व पूज्य आत्मा बन जाती है। ईश्वर पिता का सर्वश्रेष्ठ संग केवल अभी ही पुरुषोत्तम संगम युग में मिलता है तो इस समय हमें ब्रह्मा बाप के पुरुषार्थ को ही अनुकरण करना चाहिए। अन्य आत्माओं की तो चढ़ती-ठहरती अथवा गिरती कला होती रहती है अतः किसी का संग न करना चाहिए ईश्वरीय श्रीमत का ही संग हमें श्रेष्ठ पूज्य बना देगा।

—०—

आध्यात्मिक सेवा समाचार

बड़ौदा सेवा केन्द्र पर १९-४-८२ को दादी प्रकाशमणी जी के शुभागमन पर विद्यालय के ५०० भाई-बहिनों तथा शहर के मेयर डा० जतीन भाई मोदी जी ने उनका भव्य स्वागत किया। दैनिक समाचार पत्र संदेश, लोकसत्ता, वडोदरा समाचार चित्रा आदि के प्रतिनिधियों ने दादी जी से मुलाकात की, जो कि बहुत प्रभावित हुए। रसीला बहिन के दवाखाने में ८-४-८२ से ३०-४-८२ तक प्रतिदिन विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी दिखाई गई, जिससे अनेक आत्माओं को शिव बाबा का परिचय मिला।

भंडारा सेवा केन्द्र की ओर से साकोली गांव में ९-४-८२ से १३-४-८२ तक विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर रखे गए। चैतन्य झांकियां भी बनाई गईं तथा राजयोग फिल्म भी दिखाई गई, जिनसे लगभग ७००० भाई-बहनों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त इसी गांव में गायत्री माता के सतसंग की ४५ बहनों के समक्ष प्रवचन तथा प्रदर्शनी का कार्यक्रम रखा गया जो कि बहुत सफल रहा।

नडियाड सेवा केन्द्र से ब्र० कु० पूर्णिमा लिखती हैं कि यहां की 'न्यू शोरक मिल' तथा 'हिन्दुस्तान कंडक्टर मिल' में उद्योग में योग प्रदर्शनी लगाई गई, जिनसे वहां के अधिकारी वर्ग व कर्मचारी वर्ग दोनों की सर्विस हुई। इसके अतिरिक्त रखियाल, कालसर, बपोती, नेस, मंजीपुरा तथा वसो आदि गांवों में प्रदर्शनी रखी गई जिनसे लगभग १०,००० लोगों ने लाभ उठाया। साथ-साथ नडियाड, कपड़भंज, उत्तर सेडा, करम सद महीसा, कठलाल आदि स्थानों पर प्रवचन हुए।

भरूच सेवा केन्द्र की ओर से भरूच जिला के १२०० गांवों की २० लाख आत्माओं को शिव बाबा का परिचय देने हेतु चलती-फिरती प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है, जिसके लिए एक सेवाधारी भाई ने ६ मास के लिए एक ट्रक बिना खर्च के दिया है। इस ट्रक में सुन्दर फोल्डिंग प्रदर्शनी, माईक-स्पीकर, टेबुल, कुर्सियाँ, टेप मशीन, चाय-पानी, नास्ता आदि की सब सुविधा है। इस 'राजयोग विश्व शांति प्रदर्शनी' द्वारा अभी तक ६०० गांवों के लोगों को संदेश दिया जा चुका है।

करनाल सेवा केन्द्र की ओर से वहां के डेरी मेले में एक आध्यात्मिक औद्योगिक शांति प्रदर्शनी लगाई गई, जिसका उद्घाटन राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के डायरेक्टर भ्राता आई० एस० वर्मा ने किया। इसमें यह समझाया गया कि आध्यात्मिक ज्ञान का उद्योग क्षेत्र, डेरी उद्योग तथा औद्योगिक संशोधन व विकास के साथ कैसा संबंध है। इस प्रदर्शनी से लगभग १०,००० आत्माओं ने लाभ उठाया, जिनमें २५० अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक, ५०० विद्यार्थी और १५०० कर्मचारी भी शामिल थे।

रांची सेवा केन्द्र की ओर से उपसेवा केन्द्रों—गुमला एवं सिमडेगा के निकटवर्ती गांवों लोहरदगा तथा तमड़ा आदि गांवों में राजयोग विश्व शान्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनियां आयोजित की गईं, जिनके द्वारा अनेक आत्माएं लाभान्वित हुईं। इसके अतिरिक्त चरित्र निर्माण तथा राजयोग के स्लाइड भी प्रोजैक्टर द्वारा विभिन्न स्थानों पर दिखाए गए।

कपूरथला सेवा केन्द्र से ब्र० कु० कृष्णा लिखती हैं कि निकटवर्ती गांव—शेखुपुरा, कांजली में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसको बच्चे, बूढ़े, जवान सभी ने बहुत रुचि से देखा। शेखपुरा में प्रदर्शनी के साथ-साथ दिन में मंदिर में माताओं के सत्संग में प्रवचन भी

चलता था। वैशाखी के दिन सेवा केन्द्र पर ही प्रदर्शनी लगाई गई और महावीर जयन्तो पर महावीर मंदिर में माताओं के सत्संग में प्रवचन हुआ।

जोगिन्दर नगर सेवा केन्द्र से ब्र० कु० सावित्री लिखती हैं कि जोगिन्दर नगर मेले में, रिवालसर में वैशाखी मेले पर तथा हटवाड (जाहू) में मेले के अंदर विश्व कल्याण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिनसे हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया। तीन गांवों में प्रोजैक्टर शो भी दिखाया गया।

हैदराबाद सेवा केन्द्र की ओर से निकटवर्ती सिद्दीपेट ग्राम में एक सप्ताह के लिए विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी आयोजित की गई, समाप्ति समारोह पर प्रवचन का कार्यक्रम भी रखा गया। इसके अतिरिक्त १६-४-८२ को हैदराबाद सेवाकेन्द्र के १०वें वार्षिक दिवस के उपलक्ष्य में एक सार्वजनिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें शहर के विभिन्न वर्गों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया।

पणजी (गोवा) सेवा केन्द्र की ओर से देवगढ़ में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन पत्रकार पोकले जी ने किया। इसके अतिरिक्त जमसांडे स्कूल में, विट्ठल मंदिर में और साखली गांव में भी प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचन के कार्यक्रम रखे गए जो कि बहुत सफल रहे। इन सभी कार्यक्रमों से हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया।

राजकोट-सेवा केन्द्र पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों का स्नेह मिलन रखा गया, जिसमें राजकोट के कलैक्टर भ्राता बब्बर साहेब, रेडियो डायरेक्टर भ्राता बरोट, म्यूनिसीपल कमिश्नर भ्राता पिर्दी साहिब तथा इलैक्ट्रीसिटी बोर्ड के सुप्रिंटेंडिंग इंजीनियर भ्राता शाह आदि सम्मिलित हुए। इसके अतिरिक्त स्टेट तथा सैंट्रल गवर्नमेंट के यूनियन के प्रतिनिधियों का स्नेह मिलन रखा गया, जिसमें "उद्योग में योग द्वारा शांति" विषय पर प्रवचन हुआ और राजयोग फिल्म भी दिखाई गई।

नवसारी की ओर से 'विश्व-शांति आध्यात्मिक मेले' का आयोजन किया गया, जिसके उद्घाटन अवसर पर दादी जी पधारे थे। मेले में चैतन्य देवियों की झांकी और धर्मराज पुरी एक विशेष आकर्षण था। उद्घाटन से पहले पीसमार्च निकाली गई। दादी जी ने विश्व शांति का मैसेज ले जाने वाले कबूतर उड़ाए, जो मेले का सिम्बल बनाया था। मेले के दौरान गवर्नमेंट आफीसर्स, सरपंचों, महिलाओं तथा कृषि विभाग के प्रोफेसर्स का अलग-अलग स्नेह मिलन रखा गया, जिनमें लगभग ३०० आत्माओं ने भाग लिया। मेले से ६४,००० आत्माओं ने और योग शिविरों से करीब ५०० आत्माओं ने लाभ उठाया।

वर्धा सेवा केन्द्र की ओर से वर्धा कारागार में कैदियों के सामने आध्यात्मिक प्रवचन का आयोजन किया गया था। सेवा केन्द्र पर लगभग २०० कैदियों को यह कोर्स दिया जा चुका है।

हुबली सेवा केन्द्र की ओर से श्री शैल मठ के जगद्गुरु के मुख्य अतिथि स्थान पर शिव योग दिवस का कार्यक्रम रखा गया था, जिसमें शिव पिता का तथा संस्था का परिचय दिया गया।

ब्यावर सेवा केन्द्र पर न्यायविदों का स्नेह मिलन रखा गया, जिसमें राजस्थान हाई कोर्ट के न्यायाधीश भ्राता पुरुषोत्तम दास कुदाल, सेसन जज भ्राता रणवीर सहाय, मुंसिफ मैजिस्ट्रेट भ्राता गौतम तथा बहिन चन्द्रकांता, और २० एडवोकेट्स ने भाग लिया जोकि संस्था के कार्य तथा भाई-बहिनों के जीवन से बहुत प्रभावित हुए।

मेरठ सेवा केन्द्र पर विशेष योग और स्नेह मिलन का प्रोग्राम रखा गया, जिसमें मुख्य अतिथि आयुक्त (कमिश्नर) मेरठ मंडल के आर० डी० सोनकर जी थे। विश्व में शांति कैसे हो—इस विषय पर चिंतन चला। सभी ने संस्था के कार्य की प्रशंसा की।

फिरोजपुर शहर सेवा केन्द्र की ओर से टाउन हाल में मानव-कल्याण आध्यात्मिक सम्मेलन रखा गया, जिसमें मुख्य अतिथि डिप्टी कमिश्नर भ्राता

लाल थे। सी०एम०ओ०, एस०डी०एम०, बी०ई०ओ०, डाक्टर्स, इन्जीनियर्स, एम० एल० ए०, बैंक अधिकारी तथा अध्यापक वर्ग आदि प्रतिष्ठित व्यक्ति भी शामिल हुए। इस सम्मेलन से अनेक आत्माओं के ऊपर प्रभाव पड़ा। बच्चों के दिव्य गीत, नृत्य, कविता और ड्रामा आदि से श्रोता गण देर रात्रि तक शांत बैठे रहे।

कोल्हापुर सेवा केन्द्र की ओर से निकटवर्ती गांवों —हातकणंगले, कवठेपिराज, मौजे वडगांव में ईश्वरीय सेवा की गई। कोल्हापुर में महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडल के कामगार संघ का अधिवेशन था, वहां पर भी प्रवचन किया गया और प्रोजैक्टर फिल्म दिखाई गई। हातकणंगले गांव में कांग्रेस की मीटिंग में भी प्रवचन चला जिसमें ५६ गांव के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे।

अम्बाला छावनी से वाकेन्द्र द्वारा, अम्बाला शहर में आई०टी०आई० की प्रबन्धक कमेटी द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में, चरित्र-निर्माण विषय पर प्रवचन चला, जिसको विद्यार्थियों तथा शिक्षक वर्ग ने सुना। लायन्स क्लब के रुक्मिणी देवी हाल में इंडियन मेडिकल एशोसिएशन हरियाणा द्वारा 'स्प्रिचुअल हैल्थ' विषय पर एक सेमिनार के आयोजन में 'क्योर थ्रू मेडिटेशन' नामक स्टाल लगाया गया। ई०ई०जी० फोटोग्राफ जो कि जानकी दादी द्वारा परीक्षण किया गया था, दिखाया गया। सेमिनार में आए हुए सभी डाक्टर्स बहुत प्रभावित हुए।

काठमंडू सेवा केन्द्र की ओर से नारायण घाट तीर्थस्थान पर नारी सम्मेलन में प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें साईं बाबा के शिष्य और हरिहर मंदिर कमेटी के अध्यक्ष शामिल हुए। कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

देहली, पाण्डव भवन, करौलबाग की ओर से एक "शान्ति पथ प्रदर्शक" मेले का आयोजन १३ से २४ मई तक अजमल खां पार्क में किया गया। उद्घाटन समारोह में ब्र० कु० दीदी मनमोहिनी जी के अतिरिक्त भारत सरकार के सोलिस्टर जनरल, हिन्दी हिन्दुस्तान टाइम्स के सम्पादक तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। मेला आरम्भ होने के एक दिन पूर्व शोभा-यात्रा भी निकाली गई। मेले का स्थान मुख्य होने के कारण मेला देखने वालों का तांता लगा हुआ था। हज़ारों आत्माओं ने मेले से लाभ उठाया। सैंकड़ों ने योग शिविर और ज्ञान शिविर भी किए। शक्तियों की चेतन झांकी तथा धर्मराजपुरी के दृश्य मुख्य आकर्षक थे।

उदगीर सेवा केन्द्र से भारती बहन लिखती हैं कि हडलोली गांव में विठल मन्दिर में प्रवचन हुआ। गांव के व्यापारी वर्ग, डा०, शिक्षक, महिला मण्डल के अध्यक्ष आदि ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त लाडगेवाडी, राणीसावगाव गंगाखेड, मुलकी आदि में प्रवचन हुए।

बरेली सेवा केन्द्र की ओर से फरीदपुर, भरलोल, विलवा आदि स्थानों पर प्रदर्शनियों और प्रवचनों के कार्यक्रम रखे गए। जिससे हज़ारों आत्माओं ने लाभ उठाया।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, बी 9/19 कृष्ण नगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा चौपड़ा प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (E)—70